सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक: 25 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार 26 फरवरी, 2026
मूल्य ₹ 3/-

सम्पन्नता धन के कब्जे में नहीं उसके उपयोग में है।
-नेपोलियन बोनापार्ट

दो बदलावों के साथ उतरेगी भारतीय... 7
कबाड़ हेलीकॉप्टर, फर्जी सेफ्टी और... 3
भाजपा सरकार चला रही है... 2

गाजा पर खामोशी कूटनीति या फिर आत्मसमर्पण!

अटल बिहारी वाजपेई ने कहा था इजरायल को अरबों की जमीन खाली करनी होगी

» आज दुनिया देख रही है भारत अपने सबसे कठिन नैतिक इम्तिहान में क्या कर रहा है

» कभी-कभी एक शब्द बोलना साहस बन जाता है और न बोलना समर्पण

» अन्याय के खिलाफ खड़े होने से विश्वगुरु की पहचान बनती है या फिर आर्थिक साझेदारी से

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। पीएम मोदी इजरायल में हैं और भारत के भीतर से आवाज उठ रही है कि उन्हें वहां गाजा में शांति के लिए नेतन्याहू के सामने कम से कम बयान जारी करना चाहिए । कांग्रेस ने मांग की है कि पीएम मोदी इजरायल में गाजा के मुद्दे को उठाएं। सोशल मीडिया पर पूर्व पीएम अटल बिहारी बाजपेई का पुराना वीडियो भी तेजी से वायरल हो रहा है जिसमें वह खुलकर कह रहे है कि हम गुण और अवगुण के आधार पर देखेंगे, मध्यपूर्व के बारे में स्थिति साफ हो कि अरबो की जिस जमीन पर इजरायल कब्जा करके बैठा है उसे वह जमीन खाली करनी होगी।

यह वही भारत है जिसने कभी फिलिस्तीन की आजादी को नैतिक समर्थन देकर वैश्विक दक्षिण की आवाज बनने का दावा किया था। लेकिन आज वही भारत अपने सबसे शक्तिशाली नेता की चुप्पी के कारण सवालों के कटघरे में खड़ा है। क्या यह चुप्पी कूटनीति की मजबूरी है या नैतिकता की कीमत पर बनाई जा रही नई वैश्विक दोस्ती? बेंजामिन नेतन्याहू के साथ खड़े होकर गाजा का नाम तक न लेना केवल एक शब्द की कमी नहीं बल्कि उस ऐतिहासिक भूमिका से पीछे हटना है जिस पर भारत ने दशकों तक गर्व किया। अब सवाल केवल विपक्ष या भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आरोपों का नहीं है बल्कि उस नैतिक पहचान का है जिसे भारत दुनिया के सामने प्रस्तुत करता रहा है। क्या भारत अब केवल रणनीतिक साझेदारियों का देश बनकर रह गया है या फिर वह अभी भी मानवता की आवाज बनने का साहस रखता है? पीएम मोदी की यह खामोशी केवल एक कूटनीतिक क्षण नहीं है बल्कि इतिहास का वह पन्ना बन सकती है जहां भारत की आत्मा और उसकी राजनीति आमने-सामने खड़ी दिखाई दे रही है।

पीएम मोदी का इजरायल दौरा

राष्ट्र की छवि पर असर डालती है चुप्पी

यह चुप्पी केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि उस राष्ट्र की छवि पर असर डालती है, जिसने हमेशा खुद को न्याय और संतुलन का प्रतीक बताया है। भारत की ताकत केवल उसकी सेना या उसकी अर्थव्यवस्था नहीं रही बल्कि उसकी नैतिक स्थिति रही है। जब भारत बोलता था तो दुनिया सुनती थी। लेकिन जब भारत खामोश हो जाता है तो दुनिया सवाल पूछती है। आज वही सवाल भारत के सामने खड़ा है कि क्या यह चुप्पी कूटनीति की मजबूरी है या नैतिकता की हार? क्या यह नया भारत है जहां रणनीतिक हित इंसानियत की आवाज से बड़े हो गए हैं? या फिर यह केवल एक क्षणिक खामोशी है जो आने वाले समय में टूटेगी? इतिहास इस यात्रा को केवल एक राजनयिक दौरे के रूप में याद नहीं रखेगा। इतिहास इसे उस पल के रूप में दर्ज करेगा जब दुनिया जल रही थी और भारत की आवाज जो कभी आग बुझाने के लिए जानी जाती थी खुद राख के नीचे दब गई थी।

मानवता की पीड़ा पर चिंता जताने वाले प्रधानमंत्री

जब पूरी दुनिया गाजा की जलती हुई गलियों मलबे में दबे बच्चों और खामोश होती सांसों की गिनती कर रही है तब विश्व की सशक्त आवाज का दम्भ भरने वाले पीएम नरेंद्र मोदी की चुप्पी सबसे ज्यादा गूंज रही है। सार्वजनिक मंचों से गाजा के हालात को देखकर मानवता की पीड़ा पर चिंता जताने वाले प्रधानमंत्री ने जैसे ही इजरायल की धरती पर कदम रखा गाजा का जिक्र उनकी जुबान से गायब हो गया। न कोई अपील न कोई सवाल न कोई चेतावनी बस कूटनीतिक मुस्कान और रणनीतिक खामोशी की चादर ओढ़ ली इजरायल की धरती पर उनके शब्द जैसे कूटनीतिक बंकर में छिप गए। यह चुप्पी साधारण नहीं है। यह चुप्पी उस भारत की परंपरा के खिलाफ है जिसने कभी दमन के खिलाफ खड़े होने को अपनी पहचान बनाया था। यह वही भारत था जिसने फिलिस्तीन के अधिकारों के समर्थन को केवल कूटनीति नहीं बल्कि नैतिक कर्तव्य माना था। लेकिन आज जब प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ खड़े हैं तब गाजा का दर्द उनकी जुबान तक पहुंच ही नहीं पा रहा। सवाल यह नहीं कि मोदी ने क्या कहा सवाल यह है कि उन्होंने क्या नहीं कहा। क्योंकि कभी कभी एक शब्द बोलना साहस होता है और एक शब्द न बोलना समर्पण। यह वही प्रधानमंत्री हैं जो वैश्विक मंचों पर भारत को विश्वगुरु बताते हैं। लेकिन क्या विश्वगुरु की पहचान केवल आर्थिक साझेदारी से बनती है या फिर अन्याय के खिलाफ खड़े होने के साहस से भी बनती है? अगर विश्वगुरु की आवाज ही खामोश हो जाए तो फिर यह गुरु किसे रास्ता दिखाएगा? आज दुनिया देख रही है कि भारत अपने सबसे कठिन नैतिक इम्तिहान में क्या कर रहा है। सत्ता के साथ खड़ा है या सच के साथ।

कांग्रेस ने उठाए हैं तीखे सवाल

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने इस चुप्पी को लेकर तीखे सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि अगर प्रधानमंत्री इजरायल की धरती पर खड़े हैं तो उन्हें वहीं से गाजा के पीड़ितों की आवाज भी उठानी चाहिए। क्योंकि कूटनीति केवल दोस्ती निभाने का नाम

नहीं है बल्कि सच बोलने का साहस भी है। लेकिन अभी तक पीएम मोदी की यात्रा से जो तस्वीर सामने आई है उसमें रणनीति दिखती है संवेदना नहीं साझेदारी दिखती है लेकिन सवाल नहीं।

भाजपा सरकार चला रही है तानाशाही : अखिलेश यादव

» एआई समिट में प्रदर्शन को लेकर बीजेपी को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एआई समिट में आईवाईसी के शर्टलेस प्रदर्शन को लेकर बीजपी को घेरा है। सपा मुखिया ने भाजपा सरकार की बड़ी सुरक्षा चूक बताया और एआई के लिए बुनियादी ढांचा तैयार न करने का आरोप लगाया। यादव ने प्रदर्शनकारियों का समर्थन करते हुए कहा कि एक लोकतांत्रिक देश में हर किसी को विरोध करने का अधिकार है, लेकिन यह सरकार तानाशाही चला रही है।

हाल ही में संपन्न हुए एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान आईवाईसी के शर्टलेस विरोध प्रदर्शन का समर्थन करते हुए, समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और कांग्रेस के इंडिया ब्लॉक के सहयोगी अखिलेश यादव ने बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित शिखर सम्मेलन में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कथित सुरक्षा विफलता की कड़ी आलोचना की। यादव ने कहा कि भाजपा ने देश में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पहलों के लिए कोई बुनियादी ढांचा तैयार नहीं किया है।

अखिलेश यादव ने कहा कि सबसे पहले तो, भाजपा सरकार के शासन में हमेशा सुरक्षा में चूक होती रही है, और एआई शिखर सम्मेलन पर पहले दिन से ही सवाल उठाए गए थे। यह पूरी तरह से भाजपा की सुरक्षा विफलता है। आपने एआई के लिए कोई बुनियादी ढांचा या बुनियादी संरचना तैयार नहीं की है। जब आप ऐसी चीजें दिखाते हैं जो भारतीय नहीं हैं, तो स्वाभाविक रूप से लोग नाराज होंगे। विरोध प्रदर्शन का समर्थन करते हुए उन्होंने जोर देकर कहा, यह एक लोकतांत्रिक देश है और हर किसी को विरोध करने का अधिकार है, लेकिन यह एक तानाशाही है।

सरकार के लोगों को आईपी का पूरा नाम ही नहीं पता

यादव ने भाजपा प्रशासन के शासन संबंधी ज्ञान पर भी कटाक्ष करते हुए कहा कि हमारी सरकार आईपी फाइल जमा कर रही है, लेकिन सरकार में कुछ लोगों से पूछिए, उन्हें आईपी का पूरा नाम ही नहीं पता। इससे पहले 21 फरवरी को यादव ने एआई इम्पैक्ट समिट में भारतीय युवा कांग्रेस के शर्टलेस विरोध प्रदर्शन की आलोचना करते हुए कहा था कि इससे देश को शर्मनाक महसूस हुआ है।

पूरा देश जानता है कि भाजपा झूठ बोलती है

सपा प्रमुख ने कहा कि हमारे बीच आंतरिक मतभेद हो सकते हैं, पूरा देश जानता है कि भाजपा झूठ बोलती है। लेकिन, उन्हें विदेशी प्रतिनिधियों और विश्व प्रतिनिधियों के सामने ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए था जिससे हमारे देश को शर्मिंदगी हो। युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं का शर्टलेस विरोध प्रदर्शन 20 फरवरी को शिखर सम्मेलन स्थल के अंदर हुआ, जहां समूह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर समझौता करने का आरोप लगाया और कहा कि एआई कार्यक्रम में भारत की पहचान को धूमिल किया गया है।

बिहार में अपराध में भारी वृद्धि हुई और कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमराई : तेजस्वी यादव

» विपक्ष के नेता का मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर तीखा हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के नेता और बिहार में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर तीखा हमला बोलते हुए राज्य में अपराध में भारी वृद्धि और कानून-व्यवस्था के पूरी तरह चरमरा जाने का आरोप लगाया। यादव ने कहा कि राज्य सरकार की विश्वसनीयता पूरी तरह खत्म हो चुकी है।

पत्रकारों से बात करते हुए तेजस्वी यादव ने कहा कि अपराध दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। हर दिन हत्याएं, बलात्कार और गोलीबारी हो रही है। इससे पता चलता है कि सरकार की विश्वसनीयता पूरी तरह खत्म हो चुकी है... कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। तेजस्वी यादव ने कहा कि इस मौजूदा सरकार में अपराधियों का राज चल रहा है। सरकार में कोई भी, चाहे मुख्यमंत्री हों या दोनों उपमुख्यमंत्री, जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है। नीतीश कुमार भी कमजोर पड़ गए हैं। उन्हें याद नहीं रहता कि क्या हो रहा है और क्या नहीं हो रहा है। उन्होंने राज्य की राजनीतिक गतिशीलता की ओर इशारा करते हुए कहा कि आप देख सकते हैं कि नीतीश कुमार ने राज्य का गृह मंत्रालय कभी किसी को नहीं दिया। लेकिन अब उन्हें इसे भाजपा को देना होगा तेजस्वी यादव ने आत्मनिरीक्षण किए बिना कानून-व्यवस्था की स्थिति को उजागर करने वालों की आलोचना करते हुए कहा कि और जो लोग राज्य में अपराध की बात जोर-शोर से करते हैं, उन्हें पहले खुद को देखना चाहिए।

कानून-व्यवस्था अब पूरी तरह से चरमरा गई है। इससे पहले सोमवार को बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि राज्य सरकार कानून का शासन स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सिन्हा ने कहा कि विपक्ष की अपनी भूमिका है, लेकिन उसे अपनी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विपक्ष अपनी भूमिका निभाता है। उसे बिहार में रहना चाहिए, बिहार का दौरा करना चाहिए, तब उसे विकास दिखाई देगा। विपक्ष के नेता को ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। यह सरकार कानून का शासन स्थापित कर रही है।

ओवैसी सपा और अखिलेश यादव की दुकान बंद कर देंगे : राजभर

» सुभासपा के अध्यक्ष बोले- एआईएमआईएम बड़ी सेंध लगाने जा रही

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सुहेलदेव समाज पार्टी के अध्यक्ष और प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने दावा किया है कि उत्तर प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव 2027 में समाजवादी पार्टी के मुस्लिम वोट बैंक में असीउद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम बड़ी सेंध लगाने जा रही है। उन्होंने सपा और अखिलेश यादव पर हमला व बोलते हुए कहा कि 7 प्रतिशत वोट वाली पार्टी उनकी दुकान बंद कर देगी।

ओम प्रकाश राजभर ने नसीमुद्दीन सिद्दीकी के सपा में शामिल होने पर कहा कि वो अब 'दगे हुए कारतूस' हैं। इसके साथ ही उन्होंने विधानसभा चुनावों में विपक्ष के सूप ?ा सा ? होने का दावा किया। कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर मेरठ पहुंचे थे,

यहां उन्होंने विधानसभा चुनावों की तैयारी के साथ ही कई मुद्दों पर बात की. जिसमें उन्होंने दावा किया कि ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम समाजवादी पार्टी के मुस्लिम वोट बैंक में सेंध लगाएगी। 7 प्रतिशत वोट बैंक वाली पार्टी सपा की दुकान बंद कर देगी. आने वाले चुनाव उनका सूपड़ा साफ हो जाएगा. इसके साथ ही सपा में शामिल हो रहे नेताओं खासकर नसीमुद्दीन सिद्दीकी पर कहा वो अब दगे हुए कारतूस हैं। आगामी विधानसभा चुनाव 2027 को लेकर राजभर बेहद आत्मविश्वास से भरे नजर आए।

अविमुक्तेश्वरानंद मामले की पारदर्शी जांच हो : मनीष

» कांग्रेस ने राज्यव्यापी विरोध प्रदर्शन किया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस की उत्तर प्रदेश इकाई ने स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती और उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराने वालों के विरुद्ध दर्ज प्राथमिकी की निष्पक्ष और पारदर्शी जांच की मांग को लेकर राज्यव्यापी विरोध प्रदर्शन किया। यहां जारी एक बयान में कांग्रेस पार्टी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को संबोधित ज्ञापन 25 फरवरी को राज्य के सभी जिलों में जिलाधिकारियों के माध्यम से सौंपे गए थे।

कांग्रेस के प्रवक्ता मनीष हिंदवी ने बताया कि उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों में जिला प्रशासन के माध्यम से यह ज्ञापन सौंपे गए। ज्ञापन में, पार्टी ने आरोप लगाया कि अमावस्या के अवसर पर पुलिस द्वारा शंकराचार्य और उनके शिष्यों को अनावश्यक रूप से परेशान और अपमानित किया गया तथा उन्हें अनुष्ठान स्नान करने से रोका गया। इसमें आरोप लगाया गया कि कुछ शिष्यों के साथ

मारपीट की गई और उन्हें पुलिस थाने भी ले जाया गया। ज्ञापन में यह भी दावा किया गया कि बाद में यौन उत्पीड़न मामले में शंकराचार्य, उनके शिष्य स्वामी मुकुंदानंद ब्रह्मचारी और कई अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ एक प्राथमिकी दर्ज की गई। कांग्रेस ने इस प्राथमिकी को अविमुक्तेश्वरानंद की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के उद्देश्य से रची गयी एक साजिश करार दिया। संविधान के अनुच्छेद-25 और 26 का हवाला देते हुए ज्ञापन में कहा गया कि ये प्रावधान धार्मिक स्वतंत्रता और धार्मिक संप्रदायों को अपने मामलों का प्रबंधन करने के अधिकार की गारंटी देते हैं। इसने शंकराचार्य के पद को सनातन परंपरा में सर्वोच्च आध्यात्मिक पदों में से एक बताते हुए आरोप लगाया कि पूरा प्रकरण योजनाबद्ध तरीके से रचा गया प्रतीत होता है। कांग्रेस पार्टी ने ज्ञापन में कहा, हम अनुरोध करते हैं कि जिन लोगों ने प्राथमिकी दर्ज कराई है, उनकी पृष्ठभूमि की जांच उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश द्वारा पारदर्शी तरीके से की जाए और दोषी पाए जाने पर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। फ लगाए गए आरोपों की निष्पक्ष और पारदर्शी जांच की भी मांग की ताकि सच्चाई सामने आ सके। इससे पहले, कांग्रेस की उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष अजय राय ने वाराणसी में संत से मुलाकात के बाद संवाददाताओं से कहा था कि पार्टी इस मामले में स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के साथ मजबूती से खड़ी है। कांग्रेस ने कहा कि वह पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच के लिए सरकार पर दबाव बनाती रहेगी।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

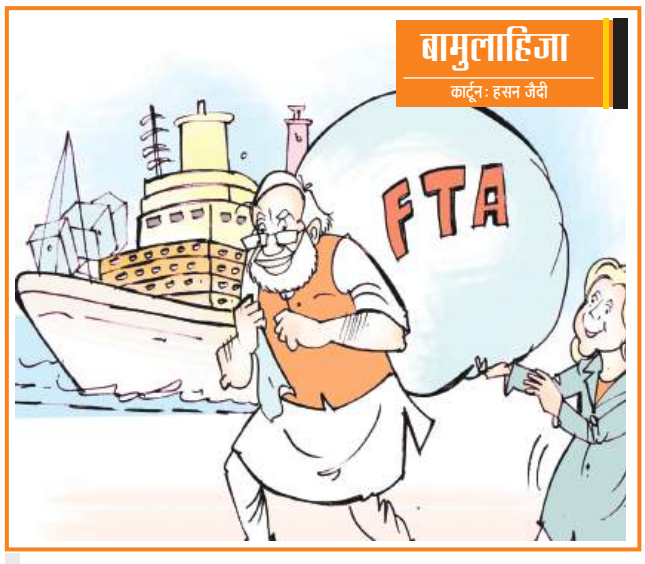

मुख्यमंत्री नायब सिंह कर रहे फर्जीवाड़ा : अनुराग ढांडा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनुराग ढांडा ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह पर पंजाब में युवाओं की फर्जी जॉइनिंग करवाने को लेकर तीखा हमला बोला है। ढांडा ने कहा कि नायब सिंह हरियाणा के मुख्यमंत्री हैं। ऐसा फर्जीवाड़ा करते वक्त उन्हें कम से कम उस पद की गरिमा का तो ख्याल रखा होता।

यह बेहद शर्मनाक है कि पंजाब में भाजपा की जमीन तैयार करने के लिए मुख्यमंत्री नायब सिंह को हरियाणा से युवाओं को ले जाकर वहां पंजाब का युवा बताना पड़ा। अनुराग ढांडा ने मुख्यमंत्री नायब सिंह से सवाल किया कि वे किसे धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं? उन्होंने

कहा कि एक तरफ हरियाणा सरकार युवाओं को रोजगार नहीं दे रही है, और दूसरी तरफ अपनी घटिया राजनीति के लिए उन्हीं युवाओं का इस्तेमाल फर्जी इवेंट्स में कर रही है. यह न केवल हरियाणा के युवाओं के साथ धोखा है, बल्कि पंजाब के युवाओं का भी घोर तिरस्कार है।

अनुराग ढांडा ने तथ्यों के साथ हमला करते हुए कहा कि पंजाब का कोई भी युवा भाजपा के साथ जुड़ने को तैयार नहीं है, जिसके पीछे कई ठोस कारण हैं। जब पंजाब बाढ़ की त्रासदी झेल रहा था, तब केंद्र की भाजपा सरकार ने पंजाब की मदद करने के बजाय अफगानिस्तान को सहायता भेजी. किसान आंदोलन के दौरान सा? सात सौ किसानों की शहादत हुई, उन पर लाठियां और गोलियां चलाई गईं, जिसका गुस्सा आज भी पंजाब के लोगों में भरा हुआ है, पंजाब के लोग आज भी उन खौफनाक दिनों को भूले नहीं। अनुराग ढांडा ने स्पष्ट किया कि कुलदीप और नसीब जैसे जिन युवाओं को मुख्यमंत्री ने खुद पटके पहनाकर जॉइनिंग कराई, वे सभी हरियाणा के रहने वाले हैं।

कबाड़ हेलीकॉप्टर, फर्जी सेफ्टी और 'रैंकिंग' के नाम पर सच छिपाने का खेल

मौत के सौदागर आसमान में नियम मौजूद, लेकिन पालन गायब

» बड़ा सवाल क्या भारत 'एविएशन कबाड़खाना' बनता जा रहा है?

» हादसे के बाद जागता है एविएशन रेगुलेशन सिस्टम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत का आसमान इन दिनों यात्रियों के लिए भरोसे का नहीं बल्कि खौफ का पर्याय बनता जा रहा है। पिछले कुछ महीनों के भीतर लगातार हुए विमान और हेलीकॉप्टर हादसों ने यह सवाल खड़े कर दिएं है कि क्या हम सुरक्षित उड़ रहे हैं या सिर्फ किस्मत के भरोसे हवा में लटकाए जा रहे हैं।

गुजरात का प्लेन क्रैश, महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार से जुड़ा हेलीकॉप्टर हादसा, झारखंड से मरीज लेकर उड़ रही एयर एंबुलेंस का क्रैश जिसमें सात लोगों की मौत हो गई, और फिर अंडमान सागर में पवन हंस के हेलीकॉप्टर का गिरना यह महज हादसे नहीं, बल्कि एक भयावह पैटर्न की ओर इशारा करते हैं।

डीजीसीए की भूमिका पर सवाल

डीजीसीए भारत में एविएशन सुरक्षा की सबसे बड़ी नियामक संस्था है। लेकिन बार-बार यह सवाल उठता रहा है कि क्या डीजीसीए वास्तव में स्वतंत्र और प्रभावी तरीके से काम कर पा रहा है? कई मामलों में डीजीसीए ने हादसे के बाद कार्रवाई की लेकिन हादसे को रोकने में विफल रहा। यह रिएक्टिव सिस्टम है प्रोएक्टिव नहीं। एक पूर्व एविएशन अधिकारी के मुताबिक भारत में एविएशन रेगुलेशन का सिस्टम हादसे के बाद जागता है पहले नहीं।

रैंकिंग का नया खेल सुधार या भ्रम?

सरकार अब चार्टर और प्राइवेट ऑपरेटरों की सेफ्टी रैंकिंग सार्वजनिक करने की तैयारी कर रही है। ऑपरेटरों को अपनी वेबसाइट पर विमान की उम्र, मेंटेनेंस हिस्ट्री, पायलट अनुभव और अन्य सेफ्टी जानकारी देनी होगी। यह कदम सुनने में अच्छा लगता है लेकिन असली खतरा यह है कि क्या यह रैंकिंग निष्पक्ष होगी? भारत में कई बार रेटिंग और सर्टिफिकेशन सिस्टम पर भी सवाल उठे हैं। अगर रैंकिंग भी मैनेज होने लगी तो यह सुरक्षा नहीं बल्कि एक नया भ्रम पैदा करेगी। क्या आम यात्री यह जांच पाएगा कि जिस हेलीकॉप्टर में वह बैठ रहा है उसकी असली हालत क्या है?

हालिया हवाई हादसे

- झारखंड एयर एंबुलेंस हादसा सभी सात लोगों की मौत
- अंडमान सागर में पवन हंस क्रैश
- अजीत पवार हैलीकॉप्टर क्रैश
- गुजरात विमान हादसा

कबाड़ मशीनों को नया रंग, मौत को नया नाम

भारत में चार्टर और हेलीकॉप्टर ऑपरेशन का एक बड़ा हिस्सा ऐसे विमानों पर टिका है जिनकी उम्र कई बार 25-30 साल तक पहुंच चुकी होती है। विदेशों में जब ये विमान अनफिट घोषित हो जाते हैं तब उन्हें कम कीमत पर भारत जैसे देशों में बेच दिया जाता है। यहां इन पुराने चॉपर और प्लेन को नया रंग, नया रजिस्ट्रेशन और नई पहचान देकर उड़ाया जाता है। झारखंड एयर एंबुलेंस हादसे की शुरुआती जांच में सामने आया कि विमान की मेंटेनेंस हिस्ट्री में कई सवाल थे। इसी तरह पवन हंस के हेलीकॉप्टर हादसों का इतिहास भी विवादों से भरा रहा है। लेकिन हर बार जांच रिपोर्ट आती है कुछ तकनीकी खामियां बताई जाती हैं और मामला ठंडे बस्ते में चला जाता है।

भारत में बढ़ते एविएशन हादसों के पीछे कई गंभीर कारण हैं

- पुराने विमान और हेलीकॉप्टर पुराने एयरक्राफ्ट अभी भी उड़ाए जा रहे हैं
- मेंटेनेंस में लापरवाही लागत बचाने के लिए जरूरी मरम्मत टाली जाती है
- पायलटों पर दबाव ज्यादा उड़ान भरने के लिए मजबूर किया जाता है
- कमजोर निगरानी डीजीसीए के पास पर्याप्त संसाधन और स्टाफ नहीं
- कॉरपोरेट दबाव मुनाफे के लिए सुरक्षा से समझौता

इन सबका परिणाम है लगातार हादसे और निर्दोष लोगों की मौत।

आसमान में गलती मतलब मौत

भारत के आसमान में उड़ान भरना तकनीकी रूप से सुरक्षित होना चाहिए लेकिन लगातार हादसे बता रहे हैं कि सिस्टम में गंभीर खामियां हैं। जब तक जवाबदेही तय नहीं होगी जब तक दोषियों को सजा नहीं मिलेगी और जब तक सुरक्षा को मुनाफे से ऊपर नहीं रखा जाएगा तब तक ये हादसे रुकने वाले नहीं हैं। हर उड़ान के साथ एक सवाल हवा में तैरता है कि क्या यह यात्रा सुरक्षित है या यह भी एक और हादसे की शुरुआत है? डीजीसीए को यह तय करना होगा कि वह एविएशन सुरक्षा को प्राथमिकता देगा या फिर हादसों के बाद सिर्फ बयान देता रहेगा। क्योंकि आसमान में गलती की कोई गुंजाइश नहीं होती वहां गलती का मतलब सिर्फ एक होता है और वह होता है मौत।

नियम मौजूद, लेकिन पालन गायब

डीजीसीए के पास नियमों की कोई कमी नहीं है। एलाइट ड्यूटी टाइम लिमिटेशन, मेंटेनेंस स्टैंडर्ड, सेफ्टी ऑडिट, पायलट ट्रेनिंग। सब कुछ कागजों पर मौजूद है। लेकिन असली समस्या नियमों के पालन की है। सूत्र बताते हैं कि कई चार्टर कंपनियां लागत बचाने के लिए मेंटेनेंस में कटौती करती हैं। पायलटों पर ज्यादा उड़ान भरने का दबाव डाला जाता है ताकि कंपनी का मुनाफा बढ़े। कई बार पायलट थकान के बावजूद उड़ान भरने को मजबूर होते हैं जो सीधे हादसे का कारण बन सकता है। डीजीसीए अब कह रहा है कि जो ऑपरेटर नियम तोड़ेंगे उनके लाइसेंस पांच साल तक रद्द किए जा सकते हैं। लेकिन सवाल यह है कि जब पहले भी नियम थे तब कार्रवाई क्यों नहीं हुई?

जनता को अंधेरे में रखा जाता है

सबसे खतरनाक बात यह है कि आम लोगों को सच नहीं बताया जाता। जब कोई हादसा होता है तो उसे तकनीकी खराबी कहकर खत्म कर दिया जाता है। असली जिम्मेदारी तय नहीं होती। चार्टर कंपनियां वीआईपी और कारपोरेट ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए सुरक्षा का भ्रम पैदा करती हैं लेकिन अंदर की सच्चाई कुछ और होती है। सवाल यह भी है कि क्या वीआईपी की जान ज्यादा कीमती है और आम लोगों की कम? सिर्फ नियम सख्त करना काफी नहीं पालन जरूरी है सरकार अब नए नियम और रैंकिंग की बात कर रही है। लेकिन इतिहास गवाह है कि भारत में नियम बनाना आसान है और उनका पालन कराना मुश्किल। जरूरी है कि डीजीसीए को पूरी तरह स्वतंत्र और जवाबदेह बनाया जाए। हर विमान और हेलीकॉप्टर का थर्ड पार्टी सेफ्टी ऑडिट हो। पुराने और अनफिट विमानों पर तुरंत रोक लगे। पायलटों पर अनावश्यक दबाव डालने वाली कंपनियों पर कड़ी कार्रवाई हो। हादसों की जांच रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए।

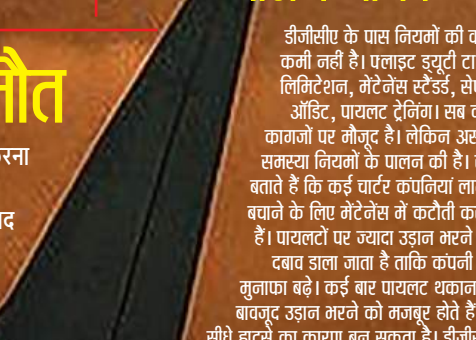

फिर कागजी सुधार की बात

हादसों के बाद एक बार फिर सरकार अब चार्टर और नान शेड्यूल आपरेटरों की सेफ्टी रैंकिंग की बात कर रही है। डीजीसीए के जरिए नए नियम लागू करने की तैयारी हो रही है। लेकिन असली सवाल यह है कि क्या सिर्फ रैंकिंग बना देने से हवाई हादसे रूक जाएंगे या फिर यह एक और कागजी सुधार होगा। जिसमें असली गुनहगार बच जाएंगे और आम लोग जोखिम उठाते रहेंगे? हादसे होते हैं लोग मरते हैं और उसके बाद लंबी कार्रवाई चलती है। कुछ दिनों बाद ब्लैक बाक्स रिपोर्ट आती है और फिर शांति। सवाल यह बाकी है कि जो हादसे होते हैं उसकी जिम्मेदारी किस पर? क्या अभी तक हादसो के गुनाहगारों को सजा मिली। ज्यादातार मामलों में जवाब न में ही मिलेगा।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

लोकतंत्र के सामने खड़ा सबसे बड़ा सवाल

जांच एजेंसियों का जाल या न्याय का हथियार

भारत के लोकतंत्र में आज सबसे बड़ा और असहज करने वाला सवाल यह नहीं है कि कौन दोषी है और कौन निर्दोष, बल्कि यह है कि दोषी तय कौन कर रहा है–अदालत या जांच एजेंसियां? पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह से प्रवर्तन निदेशालय ने अपनी सक्रियता बढ़ाई है, उसने देश की राजनीति, न्याय व्यवस्था और लोकतांत्रिक संतुलन को एक नए मोड़ पर ला खड़ा किया है। आंकड़े बताते हैं कि ईडी ने हजारों मामले दर्ज किए, लेकिन सजा की दर बेहद कम रही। सवाल यह नहीं कि कार्रवाई क्यों हो रही है, बल्कि यह है कि कार्रवाई का निशाना कौन बन रहा है और कब बन रहा है। यह संयोग नहीं हो सकता कि ईडी की कार्रवाई अक्सर उन्हीं नेताओं के खिलाफ तेज होती है, जो सत्ता के खिलाफ मुखर होते हैं। जैसे ही कोई नेता सरकार के खिलाफ राजनीतिक रूप से मजबूत होता है, अचानक पुराने फाइलों की धूल झाड़ी जाती है, समन जारी होते हैं, पूछताछ होती है और फिर गिरफ्तारी की तस्वीरें टीवी स्क्रीन पर दिखाई जाती हैं। यह प्रक्रिया कानून के दायरे में हो सकती है, लेकिन इसका समय और चयन राजनीतिक संदेह पैदा करता है।

यही कारण है कि जब सुप्रीम कोर्ट को बार-बार हस्तक्षेप करना पड़ता है, तो यह केवल एक व्यक्ति को राहत देने का मामला नहीं होता, बल्कि यह संस्थागत संतुलन को बचाने का प्रयास होता है। लोकतंत्र में जांच एजेंसियां जरूरी होती हैं। भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए मजबूत संस्थाएं होनी चाहिए। लेकिन जब वही संस्थाएं भय का प्रतीक बन जाएं, तो लोकतंत्र कमजोर होने लगता है। आज स्थिति यह है कि ईडी का नाम सुनते ही राजनीतिक हलकों में सन्नाटा छा जाता है। यह डर केवल कानून का नहीं, बल्कि उस प्रक्रिया का है, जिसमें आरोप लगने के साथ ही व्यक्ति को दोषी मान लिया जाता है, जबकि अदालत में मामला वर्षों तक चलता रहता है। सबसे बड़ा खतरा यह है कि जांच और न्याय के बीच की रेखा धुंधली होती जा रही है। जांच एजेंसी का काम केवल साक्ष्य जुटाना है, फैसला सुनाना नहीं। लेकिन आज मीडिया ट्रायल और एजेंसी की कार्रवाई मिलकर ऐसा माहौल बना देते हैं, जिसमें व्यक्ति की छवि पहले ही धूमिल हो जाती है। बाद में अगर अदालत से राहत भी मिल जाए, तो राजनीतिक और सामाजिक नुकसान की भरपाई संभव नहीं होती। यह प्रक्रिया लोकतंत्र की उस मूल भावना के खिलाफ है, जिसमें हर व्यक्ति को दोषी साबित होने तक निर्दोष माना जाता है। यह भी एक कठोर सच्चाई है कि ईडी की कार्रवाई का राजनीतिक प्रभाव बहुत गहरा होता है। गिरफ्तारी केवल कानूनी कार्रवाई नहीं होती, बल्कि यह एक राजनीतिक संदेश भी बन जाती है।

“ जब कार्यपालिका के अधीन आने वाली जांच एजेंसियां राजनीतिक विवाद का केंद्र बन जाएं, तो यह संतुलन खतरे में पड़ जाता है। यही कारण है कि सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप लोकतंत्र के लिए एक सुरक्षा कवच की तरह दिखता है। अदालत का यह संकेत कि एजेंसियों को अपनी प्राथमिकताओं पर ध्यान देना चाहिए, केवल एक टिप्पणी नहीं बल्कि एक चेतावनी भी है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

खेल भावना के अनुरूप नहीं है यह व्यवहार

प्रदीप पत्रिका

आखिर में, शेक्सपियर के शब्दों में 'यह एक मूर्ख द्वारा सुनाई कहानी जैसा रहा, हो-हल्ले और आवेश से भरी, पर सिर-पैर कोई नहीं'। बैट और बॉल के बीच मुकाबले के रूप में चलाई गई गोलियों की इस लड़ाई में, किसी को अंदाजा नहीं कि खेल का अंतिम परिणाम क्या होगा, सिवाय उन लोगों के लालच को संतुष्ट करने के, जिन्हें कैश काउंटिंग मशीन की सरसराहट भरी आवाज पसंद है। दंभ भरे दिमागों के टूटे हुए टुकड़ों को जोड़ने और मैच कराने के लिए खर्च की गई ऊर्जा आखिरकार क्या इसी लायक थी? एक समय था जब भारत-पाकिस्तान मैच, भले ही मुकाबला ज्यादातर रोमांचक न भी हो, दोनों तरफ के खिलाड़ियों के जबरदस्त खेल कौशल का नमूना हुआ करता था। क्रिकेट के नजरिए से, यह देखना दुखद है कि एक समय काफी मजबूत रहा पाकिस्तान अब घबराए हुए, अनाड़ी खिलाड़ियों की टीम सरीखा है, खिंचाई करने वाले अपने से बड़े बच्चों की टोली में फंसे एक सहमे बालक की तरह।

आश्चर्य और रोमांचक संभावनाओं से भरपूर विश्व कप, जो कट्टर परंपरावादियों तक को क्रिकेट के टी-20 प्रारूप के प्रति अपनी नापसंदगी पर फिर से सोचने पर मजबूर कर दे, भारत-पाकिस्तान का मैदान से इतर चला नाटक इस बात की बेतरह याद दिलाता है कि खेल का राजनीति के साथ घालमेल क्यों नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार, नए छोटे देशों ने क्रिकेट के इस प्रारूप को अपनाया है और पुरानी टीमों को भी चुनौती दे रहे हैं, उससे टेस्ट क्रिकेट के अवसान को लेकर बना डर और पक्का हो चला है। जब नेपाल इंग्लैंड को लगभग हरा सकता है, यूनाइटेड स्टेट्स की टीम भारत के धमाकेदार बैटिंग को लगभग नाकाम कर डाले और जिम्बाब्वे बड़ी जीत हासिल कर सकता है, तो यह साफ है कि टी-20 की दुनिया में कोई भी अजेय दिग्गज नहीं है। टेस्ट मैच प्रारूप खेलने वाले देशों का कुलीन क्लब लंबे समय तक ऐसे देशों की तलाश करता रहा, जिनसे सदस्यों की सीमित संख्या बढ़ सकें, लेकिन कोई फायदा नहीं। इसके विस्तार में नाकामी, अन्य कई कारणों के अलावा, इसके लिए आवश्यक मुश्किल कौशल पास न होना भी हो सकते हैं, जिनमें महारत हासिल करने में समय और एक माकूल क्रिकेट संस्कृति खपती है।

1970 के दशक के बाद से यह माना जाता था कि जहां टेस्ट क्रिकेट नाकाम रहा, वहां 50 ओवर का खेल कामयाब होगा। हालांकि इसने सदस्यता का अंतर कम किया और 'औसत दर्जे की' टीमों को मुकाबला करने का मौका दिया,

लेकिन इसमें भी खेल का मुख्य प्रारूप लगभग टेस्ट क्रिकेट जैसा ही रहा, अफगानिस्तान एक दुर्लभ अपवाद है। लेकिन टी-20 ने सचमुच न सिर्फ क्रिकेट खेलने के तरीके में क्रांति ला दी है, बल्कि उन देशों की कल्पना को भी जगाया है जो थकाऊ और ऊर्जा खपाऊ टेस्ट क्रिकेट में रणनीतिक कौशल में पिछड़ने पर हार की शर्मिंदगी से बचना चाहते थे। हमारे मौजूदा समय के लिए एक उक्ति जो एकदम सही बैठती है : 'जल्दबाजी एक खूबी है; सब्र एक बुराई'। क्रीज पर धैर्य और कुशलतापूर्ण एकाग्र नजर, बैटिंग के दो ऐसे आधार स्तंभ, जिनसे एक पारंपरिक टेस्ट बल्लेबाज सफल होता है। उसे अपने जल्दबाजी पर काबू पाने, सही समय का इंतजार करना और राजमिस्त्री की तरह ईंट-दर-ईंट पारी का निर्माण बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसे दरवाजे की नॉब ठीक करने की बजाय एक पूरा महल उसारना होता है। जबकि टी-20 क्रिकेट में बल्लेबाजी एक रेसिंग ट्रैक है, जिस पर चलाने को चालक को गियर-विहीन कार दी जाती है। कोई सड़क कहीं भी ऊबड़-खाबड़ नहीं होती, निबटने को कोई खतरा नहीं। उसके पास रोमांच पैदा करने और जीत हासिल करने का लाइसेंस है। इसके लिए बेहतर छवि होगी मशीन गन या उससे भी घातक हथियार पकड़े हुए एक बंदा जो तूफान की भांति तड़ातड़ गोलियां बरसा रहा है। यह ज्वालामुखी विस्फोट जैसा है, जिसने बहुत सारे 'साहसी युवाओं' को सम्मोहित कर रखा है और 'बोर' हुए बड़ों तक को अपनी लत में फांस लिया है। पांच दिन चलने वाला खेल सिमटकर सिर्फ साढ़े तीन घंटे का खेल रह गया है, इसने क्रिकेट के व्याकरण को उलट दिया है।

360 डिग्री घूमने वाले बैट, गायब होते डिफेंसिव प्रोड्स, स्कूप और रिवर्स स्वीप, रैंप अप, जानबूझकर बैट के किनारे से मारे गए शॉट जो बाउंड्री की ओर बिजली की तरह लपकते हैं। यह एक तबाही बरपाने जैसा है और इस बौछार का मुकाबला करने के लिए बॉलर भी धोखा और चकमा देने के नए-नए तरीके ईजाद कर रहे हैं। फिंगर फ्लिक, नकल बॉल्स, साइड-ऑन रिलीज, सटल पॉज और अनेकानेक किस्म की स्पीड वेरिएशन उन कई तरीकों में हैं, जिनका इस्तेमाल बैट्समैन को बांधकर रखने की उम्मीद में किया जा रहा है। टिके रहने लिए गेंदबाज को जादूगर बनना होता है वरना जल्द ही हार का सामना करना पड़ेगा।

मुफ्त रेवड़ी संस्कृति जीवंत लोकतंत्र के लिये घातक

ललित गर्ग

भारतीय लोकतंत्र की विडंबना यह है कि चुनाव आते ही जनसेवा का स्वरूप बदलकर जनलुभावन राजनीति में परिवर्तित हो जाता है। राजनीतिक दलों ने मुफ्त की योजनाओं को चुनावी सफलता का शॉर्टकट बना लिया है। मतदाताओं को तात्कालिक आर्थिक लाभ देकर वोट हासिल करने की प्रवृत्ति लगातार मजबूत हो रही है। आगामी तीन-चार माह में विधानसभा चुनाव होने है, इसी संदर्भ में जब असम, पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में राजनीतिक सरगर्मियां तेज हुईं, तब इस संस्कृति का प्रभाव और स्पष्ट दिखाई देने लगा। इसी पृष्ठभूमि में देश की शीर्ष अदालत, सर्वोच्च न्यायालय, ने मुफ्त की योजनाओं के अनियंत्रित विस्तार पर गंभीर टिप्पणी की। यह टिप्पणी केवल कानूनी दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा को लेकर एक चेतावनी है। लोकतंत्र का मूल उद्देश्य जनकल्याण है। राज्य का दायित्व है कि वह गरीब, वंचित और कमजोर वर्गों को सहारा दे।

सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएं, न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी-ये सब कल्याणकारी राज्य की पहचान हैं। लेकिन जब जनहित और चुनावी लाभ के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है, तब समस्या जन्म लेती है। लक्षित समर्थन और अतिरेक उदारता में अंतर है। एक ओर ऐसी योजनाएं हैं जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती हैं, दूसरी ओर ऐसी घोषणाएं हैं जो केवल मतदाता को तात्कालिक राहत देकर उसे निर्भरता की आदत सिखाती हैं। जब राजस्व घाटे से जूझ रहे राज्य मुफ्त बिजली, मुफ्त यात्रा या नकद वितरण की घोषणाएं करते हैं, तो प्रश्न उठता है कि यह संसाधन कहां से आएंगे और इसकी कीमत कौन चुकाएगा? राजकोषीय अनुशासन किसी भी राज्य की आर्थिक सेहत का आधार है। यदि राज्य अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए खजाने को खाली करता है, तो दीर्घकालिक विकास प्रभावित होता है। जो धन बुनियादी ढांचे के निर्माण, अस्पतालों के सुदृढ़ीकरण, विद्यालयों की गुणवत्ता सुधार और रोजगार सृजन में लगना चाहिए, वह वोटों की फसल काटने में खर्च हो जाता है।

यह प्रवृत्ति केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि नैतिक दृष्टि से भी चिंताजनक है। लोकतंत्र में मतदाता की स्वतंत्रता सर्वोपरि मानी जाती है। यदि मतदाता को परोक्ष रूप से आर्थिक प्रलोभन देकर प्रभावित किया जाता है, तो यह स्वतंत्र निर्णय की भावना को कमजोर करता है। सर्वोच्च न्यायालय ने तार्किक प्रश्न उठाया कि राज्य रोजगार सृजन और कौशल विकास पर अधिक ध्यान क्यों नहीं देते? वास्तव में रोजगार ही स्थायी सशक्तीकरण का माध्यम है। जब व्यक्ति अपने श्रम और कौशल से आय अर्जित करता है, तब उसमें आत्मसम्मान और आत्मविश्वास दोनों विकसित होते हैं। इसके विपरीत, निरंतर मुफ्त सुविधाएं व्यक्ति को निर्भर बनाती हैं। धीरे-धीरे परिश्रम की संस्कृति कमजोर पड़ती है और समाज में अकर्मण्यता की मानसिकता पनपने लगती है।

यह स्थिति लोकतंत्र की सुदृढ़ता के लिए खतरनाक है, क्योंकि लोकतंत्र केवल वोट डालने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि सक्रिय और जिम्मेदार नागरिकता का नाम है। चुनाव पूर्व घोषित योजनाओं की निष्पक्षता भी प्रश्नों के घेरे में है। जब आचार संहिता लागू रहने के दौरान बड़े पैमाने पर आर्थिक वितरण होता है, तो विपक्षी दल इसे असमान प्रतिस्पर्धा मानते हैं। ऐसे मामलों में निष्पक्ष निगरानी की जिम्मेदारी भारत का निर्वाचन आयोग पर आती है। निर्वाचन आयोग को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी दल मतदाताओं को अप्रत्यक्ष रिश्वत देकर चुनावी लाभ न ले। आचार संहिता का उल्लंघन केवल तकनीकी त्रुटि नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मर्यादा का हनन है। यदि इस पर कठोर कार्रवाई नहीं होती, तो भविष्य में यह प्रवृत्ति और गहरी जड़ें जमा सकती है। निस्संदेह, इस बारे में कोई दो राय नहीं हो सकती है कि राज्यों का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वे विशेष रूप से कमजोर वर्ग के लोगों की खास तौर से देखभाल करें। हालांकि, जब राजस्व घाटे वाले राज्य मुफ्त की योजनाओं पर बड़ी रकम खर्च करते हैं, तो सरकारी खजाने पर दबाव और अधिक बढ़ जाता है। विडंबना यह है कि जिस धनराशि का इस्तेमाल बुनियादी ढांचे में सुधार, स्वास्थ्य सेवाओं को सक्षम बनाने और शिक्षा की सुविधा को समृद्ध करने के लिये किया जाना चाहिए, वो राशि अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिये खर्च कर दी जाती है। जरूरत इस बात की है कि कौशल विकास के जरिये लोगों को इस तरह सक्षम बनाया जाए जिससे उन्हें दीर्घकालिक व स्थायी लाभ मिल सकें।

यह भी समझना होगा कि मुफ्त योजनाओं का हर स्वरूप गलत नहीं है। आपातकालीन परिस्थितियों में राहत देना, महामारी या प्राकृतिक आपदा के समय सहायता पहुंचाना, सामाजिक न्याय के तहत वंचित वर्गों को अवसर देना-ये सब राज्य की जिम्मेदारी है। परंतु चुनावी मौसम में अचानक घोषणाओं की बाढ़ आ जाना और दीर्घकालिक वित्तीय परिणामों की अनदेखी करना लोकतांत्रिक परिपक्वता का संकेत नहीं है। यह राजनीतिक दलों के वैचारिक दिवालियेपन को दर्शाता है, जहां दूरदृष्टि की जगह तात्कालिक लाभ को प्राथमिकता दी जाती है। लोकतंत्र की मजबूती केवल संस्थाओं से नहीं, बल्कि नागरिकों की सजगता से भी आती है। यदि मतदाता केवल तात्कालिक लाभ देखकर मतदान करता है, तो वह अनजाने में ऐसी संस्कृति को प्रोत्साहित करता है जो अंततः उसी के भविष्य को प्रभावित करती है।

गुलाब जामुन

होली में भर देगा मिठास

होली के दिन गुलाब जामुन से अपना और दोस्तों का मुंह जरूर मीठा करें। यह भारत की प्रसिद्ध डेजर्ट रेसिपी है। इसे बनाने के लिए पहले इन्हें डीप फ्राई किया जाता है, उसके बाद शुगर सिरप में डुबाया जाता है। भारत के हर कोने में आपको गुलाब जामुन खाने को मिल जाएगा। लेकिन आज हम आपको गुलाब जामुन बनाने का एक नया तरीका बता रहे हैं। इस तरीके में गुलाब जामुन के अंदर बहुत सारे ड्राई फ्रूट्स को भरा जाता है। जिससे इसका स्वाद और भी ज्यादा बढ़ जाता है। इसे आप स्टफ्ड गुलाब जामुन कह सकते हैं। गुलाब जामुन बनाते समय थोड़ी सी और मेहनत करके स्टफिंग के जरिए आप अपनी रेसिपी को और भी ज्यादा खास बना सकते हैं। इसके साथ ही आपके गुलाब जामुन को एक खास फ्लेवर भी मिलेगा।

मुख्य सामग्री

100 ग्राम खोया, 1 टेबल स्पून मैदा या सूजी, 1/4 टी स्पून बेकिंग सोडा, 2 कप चीनी, 2 कप पानी, 2 टेबल स्पून मिल्क, 1/2 कप नटस और आयल सीडस।

विधि

सबसे पहले एक बर्तन में खोवा ले, और जिस तरह से आप आटा गूंथते हैं उसी तरह से खोवा को भी अच्छी तरह से मसल लें। इसके बाद मैदा को भी डालकर अच्छी तरह से गूंथ ले। आपको मैदा को कम से कम 4 से 5 मिनट तक गूंथना है ताकि यह नर्म हो जाए। खोवा और मैदा को आपस में मिलाकर अच्छी तरह से इतना गूंथते है कि आपका डोह बिल्कुल सॉफ्ट हो जाए, इससे गुलाब जामुन भी सॉफ्ट बनेगा। अब इसमें चुटकी भर इलायची का पाउडर डालें और इसे भी अच्छी तरह से मिला लें। इसके बाद इसमें बेकिंग सोडा डालें और पूरे डोह को अच्छी तरह से मिला ले। फिर 15 मिनट के लिए एक तरफ अलग रख दें। अब बारी है स्टाफिंग तैयार करने की। इसके लिए सबसे पहले ड्राई फ्रूट्स ले, अब इसमें खोवा, केसर दूध डालकर इन्हें अच्छी तरह से मिलाए और एक तरफ अलग रख दें। एक पैन ले, पैन में शक्कर और पानी डालकर अच्छी तरह से मिलाए। इसमें इलायची का पाउडर, केसर की पंखुड़ियां डालें और इसे गाढ़ा होते तक अच्छी तरह से पकाएं। अब डो से छोटे-छोटे बॉल की तरह गोले तैयार करें, उसके बाद बीच में फिलिंग भरे और इसे कवर कर दे। एक पैन ले। पैन को गर्म करें इसके बाद इसमें तेल डाले। तेल को भी अच्छी तरह से गर्म होने दें। फिर इसमें तैयार किए गए गुलाब जामुन डालें और इन्हें सुनहरा होने तक भूनें। अब इन्हें निकाल कर थोड़ा ठंडा होने दें। फिर इन गुलाब जामुन को शुगर सिरप में डूबा दे। 2 से 3 घंटे तक इन्हें इसी तरह से डूबे रहने दे।

घर पर ही बनाकर खिलाएं स्वादिष्ट समोसा

त्योहार के सीजन में खाने-पीने का अपना अलग ही मजा होता है। खासतौर पर अगर बात करें भारतीय पकवानों की तो चटाकेदार भारतीय खाने और नाश्ते की तो बात की निराली होती है। लंच के बाद अक्सर शाम की चाय के साथ कुछ न कुछ खाने का मन करता रहता है। ऐसे में इस वक्त के लिए समोसा लगभग हर किसी को पसंद आता है। चाय के साथ अगर खाने को गरमागर्म समोसे मिल जाएं तो ये लोग उसे काफी चाव के साथ खाते हैं। वैसे तो भारत के हर गली- मोहल्ले में आपको समोसे आपको बनते हुए दिख जाएंगे, लेकिन कई बार ऐसा होता है कि, लोग बाहर के बने समोसे खाने से बचते हैं।

सामान

मैदा, आलू, हरी मिर्च, धनिया, अदरक, तेल, नमक, लाल मिर्च पाउडर, छोटी चम्मच हल्दी पाउडर, 1/2 छोटी चम्मच गरम मसाला, छोटी चम्मच हींग, छोटी चम्मच अजवाइन।

विधि

समोसा तैयार करने के लिए सबसे पहले मैदे को छानकर एक बड़े से कटोरे में निकाल लें। इसके बाद इस मैदा में नमक और अजवाइन डालें। अच्छी तरह के इसे मिलाने के बाद पानी डालते हुए मैदा गूंथ लें। मैदा को गूंथने के बाद इसे साइड में रख लें। इसके बाद एक पैन लेकर उसमें तेल गर्ल करें। अब इसमें उबले हुए आलू डालकर अच्छी तरह से मैश करें। इन आलूओं में अब हरी मिर्च, धनिया, अदरक, नमक, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, गरम मसाला, हींग और अजवाइन मिलाएं। अब इसे अच्छी तरह से तब तक भूनें। जब ये सही से भुन जाए तो आलूओं को एक प्लेट में निकाल कर रख लें। अब बारी आती है समोसा बनाने की। समोसा बनाने के लिए अब गूंथी हुई मैदा की लोई लेकर इसे गोल बेल लें। अब इसे बीच से दो भागों में काटकर एक भाग उठाएं। इस एक भाग को तिकोना करते हुए उसमें आलू भरें। आलू भरकर इसे ऊपर से गीली मैदा की मदद से चिपका दें। ऐसे करके सभी समोसे तैयार कर लें। बस अब ये समोसे तैयार हैं। आप चाहें तो तेल में इसे फाई कर लें। अगर तेल वाला समोसा नहीं खाना तो आप इसे एयरफ्राई भी कर सकते हैं।

हंसना मना है

लड़का लड़की से-कहां जा रही हो? लड़की-आत्महत्या करने। लड़का- तो इतना मेकअप क्यूं किया है? लड़की- अनपढ़, कल न्यूजपेपर में फोटो तो आएगी ना।

यात्री (अखबार पढ़ते- पढ़ते)- अरे भाई कुली, मुझे उस डिब्बे मैं बिठाना, जहां बाते करने वाला कोई न हो ताकि मैं अखबार पढ़ सकूं। कुली(बाबू जी) - आप चिन्ता न करें, मैं आपको माल गाड़ी के डिब्बे में बिठाऊंगा।

संता ने लड़की को प्रपोज किया- क्या तुम मुझसे शादी करोगी? लड़की-तमीज से बात करो। संता- बहन जी, क्या आप मुझसे शादी करेंगी?

सन्ता- मां खुशखबरी है, हम दो से तीन हो गये हैं? मां- बधाई हो बेटा, क्या हुआ है, बेटा या बेटी? सन्ता-ना बेटा, और ना बेटी, मैने दुसरी शादी कर ली है।

कहानी

दानवीर कर्ण

महाभारत की कथा में कई महान चरित्रों का जिक्र है। उन्हीं में से एक थे दानवीर कर्ण। श्रीकृष्ण हमेशा कर्ण की दानवीरता की प्रशंसा करते थे। वहीं, अर्जुन और युधिष्ठिर भी दान-पुण्य करते रहते थे, लेकिन श्रीकृष्ण कभी उनकी प्रशंसा नहीं करते थे। एक दिन अर्जुन ने श्रीकृष्ण से इसका कारण पूछा। श्रीकृष्ण बोले, समय आने पर वह यह साबित कर देंगे कि सबसे बड़ा दानवीर सूर्यपुत्र कर्ण है। कुछ दिनों के बाद एक ब्राह्मण अर्जुन के महल में आया। उसने बताया कि पत्नी की मृत्यु हो गई है। उसके दाह संस्कार के लिए उन्हें चन्दन की लकड़ियों की जरूरत है। ब्राह्मण ने अर्जुन से चंदन की लकड़ी दान में मांगी। अर्जुन ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि राजकोष से चन्दन की लकड़ियों का इंतजाम किया जाए, लेकिन उस दिन न तो राजकोष में चंदन की लकड़ियां मिली और न ही पूरे राज्य में। अर्जुन ने ब्राह्मण से कहा, आप मुझे क्षमा करें, मैं आपके लिए चंदन की लकड़ी का इंतजाम नहीं कर सका। श्रीकृष्ण इस पूरी घटना को देख रहे थे। उन्होंने ब्राह्मण से कहा, आपको एक जगह चंदन की लकड़ियां जरूर मिलेगी, आप मेरे साथ चलिए। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भी अपने साथ ले लिया। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने ब्राह्मण का वेश बनाया और उस ब्राह्मण के साथ कर्ण के दरबार में पहुंचे। वहां भी ब्राह्मण ने कर्ण से चंदन की लकड़ी दान में मांगी। कर्ण ने अपनी मंत्री से चंदन की लकड़ी का इंतजाम करने को कहा। थोड़े समय बाद कर्ण के मंत्री ने कहा कि पूरे राज्य में कहीं चंदन की लकड़ी नहीं मिली। इस पर कर्ण ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि उसके महल में चंदन के खंभे हैं, उन्हें तोड़कर ब्राह्मण को दान दिया जाए। मंत्री ने ऐसा ही किया। ब्राह्मण चंदन की लकड़ी लेकर अपनी पत्नी के दाह संस्कार के लिए चला गया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा, देखो तुम्हारे महल के खंभों में भी चन्दन की लकड़ी लगी है, लेकिन तुमने ब्राह्मण को निराश किया। वहीं, कर्ण ने एक बार फिर अपनी दानवीरता का परिचय दिया।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

व्यापार-व्यवसाय में बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी। निवेश शुभ रहेगा। भाग्य का साथ रहेगा।

वृषभ

यात्रा मनोरंजक रहेगी। किसी मांगलिक कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद प्राप्त होगा।

मिथुन

व्यर्थ भागदौड़ रहेगी। समय का अपव्यय होगा। दूर से दुःखद समाचार प्राप्त हो सकता है। विवाद से क्लेश होगा। काम में मन नहीं लगेगा। लेन-देन में जल्दबाजी न करें।

कर्क

कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शारीरिक कष्ट संभव है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। कोई ऐसा कार्य न करें जिससे कि नीचा देखना पड़े।

सिंह

शत्रु शांत रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें। दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। घर में प्रतिष्ठित अतिथियों का आगमन हो सकता है। व्यय होगा।

कन्या

भाग्योन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। रोजगार प्राप्ति सहज ही होगी। व्यावसायिक यात्रा से लाभ होगा। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। निवेशादि शुभ रहेंगे।

तुला

अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। पुराना रोग उभर सकता है। वाणी पर नियंत्रण रखें। किसी भी अपरिचित व्यक्ति पर अंधविश्वास न करें।

वृश्चिक

प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। शुभ समाचार मिल सकता है। शारीरिक कष्ट संभव है। अज्ञात भय रहेगा। लेन-देन में सावधानी रखें। चिंता रहेगी।

धनु

आराम का समय मिलेगा। आशंका-कुशंका रहेगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। प्रमाद न करें।

मकर

यात्रा मनोनुकूल लाभ देगी। राजभय रहेगा। जल्दबाजी व विवाद करने से बचें। थकान महसूस होगी। किसी के व्यवहार से स्वाभिमान को ठेस पहुंच सकती है। धनार्जन होगा।

कुम्भ

वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शारीरिक शिथिलता रहेगी। काम में मन नहीं लगेगा। कुसंगति से बचें।

मीन

कष्ट, भय व चिंता का वातावरण बन सकता है। विवेक से कार्य करें। समस्या दूर होगी। कानूनी अड़चन दूर होकर स्थिति मनोनुकूल बनेगी। धनार्जन होगा।

बॉलीवुड | मन की बात

अब मैं हल्के-फुल्के रोल करना चाहती हूं : तापसी

तापसी पन्नू को अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'अस्सी' के लिए प्रशंसाएं मिल रही हैं। फिल्म को भी क्रिटिक्स द्वारा काफी सराहा जा रहा है। हालांकि, हर बार की तरह इस बार भी अच्छा कंटेंट और तारीफों के बावजूद फिल्म बॉक्स ऑफिस धीमी रफ्तार से ही आगे बढ़ रही है। इस बीच तापसी पन्नू ने एक ही तरह के किरदार के लिए एक ही तरह के कलाकारों को चुनने के मुद्दे पर सवाल उठाया। तापसी की अनुभव सिन्हा के साथ ये तीसरी फिल्म है, इससे पहले दोनों 'मुल्क' और 'थप्पड़' में भी साथ काम कर चुके हैं। गलाट्टा प्लस के साथ बातचीत के दौरान तापसी पन्नू ने बताया कि उन्होंने कई प्रमुख निर्देशकों से उनकी फिल्मों में बार-बार दोहराए जाने वाले कास्टिंग विकल्पों के बारे में सवाल किए हैं। एक्ट्रेस ने कहा कि यह मुश्किल है। मेरे लिए नहीं, बल्कि लोगों के लिए यह कल्पना करना मुश्किल है क्योंकि हम अपनी कल्पना के आरामदायक दायरे में इतने खुश रहते हैं। 'ठीक है, यह इस तरह की भूमिका है, तो यह ठीक रहेगी।' कोई भी लीक से हटकर सोचना नहीं चाहता। जब मैं यहां के कुछ शीर्ष निर्देशकों से मिलने जाती हूं, तो उनसे मेरी बातचीत होती है। सबसे पहले मुझे यह धारणा तोड़नी पड़ती है कि मैं ऐसी फिल्में करने में सहज हूं, जिनमें मैं मुख्य भूमिका में नहीं हूं। यानी कि कहानी मेरी नहीं है। फिर मुझे उन्हें बताना पड़ता है कि मैं कुछ हल्की-फुल्की भूमिकाएं करना चाहती हूं। ऐसा नहीं है कि अगर मुझे फिल्म में होना ही है तो उससे कोई समस्या जुड़ी होनी चाहिए। तापसी ने आगे बताया कि मैं सच में उन पर सवाल उठाती हूं। आप एक ही तरह के किरदारों के लिए हमेशा एक ही चेहरे को क्यों चुनते हैं? यह उनके साथ भी अन्याय है।

शूटिंग की वजह से लव एंड वॉर की रिलीज में होगी देरी

संजय लीला भंसाली जब कोई फिल्म बनाते हैं, तो फैंस बहुत बड़ी-भव्य चीजें, शानदार सेट, बड़ी कहानी और कमाल की क्रिएटिविटी की उम्मीद करते हैं। उनकी फिल्में हमेशा आंखों को सुकून देने वाली और भव्य होती हैं। लेकिन उनकी नई फिल्म लव एंड वॉर अटकी हुई नजर आ रही है।

वैरायटी इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, पहले प्लान था कि फिल्म की शूटिंग सिर्फ 120 दिनों में पूरी हो जाएगी। लेकिन अब तक 175 दिन हो चुके हैं और अभी भी काम बाकी है। तीन बड़े गाने और एक महत्वपूर्ण सीन अभी बाकी हैं। इसके लिए और कम से कम 50 दिन लगेंगे। संजय लीला भंसाली हर फ्रेम को बहुत बारीकी से बनाते हैं और भव्यता में कोई कसर नहीं छोड़ते। यही उनकी खासियत है, लेकिन इसी वजह से देरी भी हो रही है। खासकर युद्ध के सीन बहुत बड़े और मुश्किल हैं, इसलिए समय ज्यादा लग रहा है। शुरुआत में फिल्म का बजट 350 करोड़ रुपये था। अब यह बढ़कर लगभग 425 करोड़ रुपये हो गया है। जानकारी के अनुसार यह रकम सिर्फ प्रोडक्शन की है। रिपोर्ट्स के अनुसार, रणबीर, विक्की और आलिया ने पहले पैसे लेने की बजाय फिल्म के प्रॉफिट में हिस्सा लेने का फैसला किया है। यानी उनकी कमाई फिल्म की कमाई पर निर्भर करेगी। फिल्म लव एंड वॉर की शूटिंग अभी भी पूरी नहीं हुई है। रिलीज की तारीख 2026 के आखिर या 2027 की शुरुआत में बताई जा रही है। यह फिल्म लव ट्रायंगल पर आधारित हो सकती है। तो वहीं कुछ लोग इसे पुरानी फिल्म संगम से जोड़ रहे हैं, लेकिन भंसाली ने इससे इनकार किया है। फिल्म लव एंड वॉर में रणबीर कपूर, विक्की कौशल और आलिया भट्ट नजर आएंगे। यह एक रोमांटिक पीरियड ड्रामा फिल्म है, जिसमें युद्ध के समय की प्रेम कहानी दिखाई जाएगी।

'ओ रोमियो' के बाद कई बड़े प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने वाली हैं तृप्ति डिमरी

तृप्ति डिमरी इन दिनों अपनी फिल्म 'ओ रोमियो' को लेकर सुर्खियों में हैं। बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म को मिली जुली प्रतिक्रिया मिल रही है। आने वाले दिनों में तृप्ति एक से बढ़कर एक बड़े प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने वाली हैं। आइए उनकी अपकमिंग फिल्मों के बारे में जानते हैं।

फिल्म स्पिरिट: फिल्म स्पिरिट इस लिस्ट में सबसे पहले नंबर पर है। यह एक पैन इंडियन थ्रिलर फिल्म है। यह फिल्म 5 मार्च 2027 को रिलीज होगी। यह एक तेलुगु भाषा की एक्शन थ्रिलर फिल्म है। इसका निर्देशन एनिमल फेम संदीप रेड्डी वांगा कर रहे हैं। फिल्म में प्रभास और तृप्ति डिमरी लीड रोल में नजर आएंगे।

फिल्म मां बहन: फिल्म मां-बहन सीधे ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी। यह एक अपकमिंग मूवी है, जो एक मां और बेटियों की कहानी हैं। इस फिल्म में तृप्ति डिमरी और बॉलीवुड एक्ट्रेस माधुरी दीक्षित मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। यह एक डार्क कॉमेडी फिल्म है। इसका डायरेक्शन सुरेश त्रिवेणी किया है। इसकी रिलीज डेट आनी बाकी है।

फिल्म एनिमल पार्क: एनिमल पार्क फिल्म का निर्देशन संदीप रेड्डी वांगा करेंगे। रणबीर कपूर स्टारर ब्लॉकबस्टर फिल्म एनिमल का सीक्वल 'एनिमल पार्क' है। इस फिल्म में तृप्ति डिमरी भी अहम किरदार निभाने वाली हैं। फिल्म के पहले पार्ट में भी तृप्ति ने शानदार काम किया था। इस फिल्म का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है।

परवीन बाबी बायोपिक: परवीन बाबी पर एक बायोपिक बन सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें, तो 70ह्य की मशहूर अदाकारा परवीन बाबी की जिंदगी पर आधारित होगी। इस फिल्म में तृप्ति डिमरी लीड रोल में होंगी। इसका डायरेक्शन सोनाली बोस करेंगे। यह फिल्म सीधे नेटफ्लिक्स पर रिलीज की जाएगी। अभी इसकी रिलीज डेट सामने नहीं आई है।

फिल्म विक्की विद्या का वो वाला वीडियो 2: विक्की विद्या का वो वाला वीडियो पार्ट 2 साल 2024 में आई कॉमेडी फिल्म विक्की विद्या का वो वाला वीडियो का सीक्वल है। इस फिल्म में राजकुमार राव और तृप्ति डिमरी लीड में नजर आ सकते हैं। हालांकि, अभी तक इस फिल्म की आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।

अजब-गजब | चिड़ियों का यह सच जानकर भनभना जाएगा दिमाग

पेशाब नहीं करती चिड़ियां, मल के साथ सफेद चिपचिपा या पाउडर जैसा हिस्सा होता है पेशाब !

पशु-पक्षियों की दुनिया में कई ऐसी हैरान करने वाली बातें हैं, जो सुनकर दिमाग भनभना जाता है। इनमें से एक सबसे शॉकिंग फैक्ट पक्षियों से जुड़ा है। चिड़ियां और ज्यादातर पक्षी पेशाब नहीं करते! जी हां, बिल्कुल सही पढ़ा आपने। इंसान या दूसरे स्तनधारी जीवों की तरह वे अलग से पीला लिक्विड यूरिन नहीं निकालते। तो फिर वे जो पानी पीते हैं, वो कहां चला जाता है? ये सवाल इतना चौंकाने वाला है कि पहली बार सुनने पर यकीन नहीं होता। लेकिन विज्ञान इसका पूरा जवाब देता है और वो भी कमाल का!

नहीं करती पेशाब: पक्षियों के शरीर में किडनी तो होती हैं, जो ब्लड से गंदगी निकालती है। इंसानों में प्रोटीन के ब्रेकडाउन से निकलने वाला नाइट्रोजन वेस्ट यूरिया बनता है, जो पानी में घुलकर पेशाब के रूप में निकलता है। लेकिन पक्षियों में यही नाइट्रोजन यूरिक एसिड में बदल जाता है। यूरिक एसिड पानी में बहुत कम घुलनशील होता है, इसलिए इसे निकालने के लिए ज्यादा पानी की जरूरत नहीं

पड़ती। ये एक तरह का पानी बचाने का प्राकृतिक तरीका है।

सबसे बड़ा कमाल ये है कि पक्षियों में मूत्राशय ही नहीं होता! इंसानों में यूरिया ब्लैडर में जमा होता है और जरूरत पड़ने पर निकाला जाता है। लेकिन पक्षी उड़ते हैं, तो बॉडी को जितना हल्का रखना संभव हो, उतना बेहतर होता है। अगर ब्लैडर होता और लिक्विड पेशाब स्टोर होता, तो वजन बढ़ता और उड़ान मुश्किल हो जाती। इसलिए यूरिक एसिड क्रिस्टल या सफेद पेस्ट जैसी चीज बनता है, जो क्लोआका नाम के एक ही छेद से मल के साथ मिलकर बाहर निकल जाता है। क्लोआका पक्षियों का वो बहुउद्देशीय अंग है, जो पाचन, उत्सर्जन और प्रजनन तीनों काम करता है।

अब समझिए सफेद गोबर का राज: जब आप चिड़िया या कबूतर का गोबर देखते हैं, तो उसमें काला/भूरा हिस्सा ठोस मल होता है और सफेद चिपचिपा या पाउडर जैसा हिस्सा यूरिक एसिड यानी उनका पेशाब होता है! यही सफेद भाग है जो कारों, छतों या सड़क पर सबसे ज्यादा दिखता है। ब्रिटानिका और नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम जैसी संस्थाओं की रिसर्च बताती है कि ये सफेद पदार्थ यूरिक एसिड क्रिस्टल से भरा होता है, जो पानी बचाने में मदद करता है।

पक्षी उड़ान भरते समय पानी की बर्बादी नहीं कर सकते। उनके किडनी और क्लोआका मिलकर पानी को 90-98प्रतिशत तक वापस सोख लेते हैं। क्लोआका में ही री-अब्सॉर्प्शन होता है, यानी जो पानी यूरिक एसिड के साथ आता है, वो बॉडी में वापस चला जाता है। इससे पक्षी ज्यादा पानी पीने के बावजूद डिहाइड्रेट नहीं होते और लंबी उड़ानें भर सकते हैं।

मेट्रो और रैपिड रेल में क्या फर्क है? हर किसी को पता होना चाहिए जवाब!

भारत में अब लोग नमो भारत ट्रेन और मेरठ मेट्रो रेल सेवा जैसी आधुनिक रेल सेवाओं में सफर का अनुभव लेने जा रहे हैं। मेट्रो यात्रा जहां देश में लंबे समय से आम हो चुकी है, वहीं रैपिड रेल की शुरुआत ने लोगों के बीच उत्सुकता भी बढ़ा दी है। कई लोग तस्वीरें देखकर यह सोच रहे हैं कि क्या मेट्रो और रैपिड रेल एक जैसी ही होती हैं। अगर आपके मन में भी ऐसा सवाल है, तो सफर शुरू करने से पहले इनके बीच का फर्क जान लेना जरूरी है। मेट्रो एक तेज रफ्तार, बिजली से संचालित शहरी परिवहन प्रणाली है, जो शहर के भीतर अलग-अलग ग्रेड-सेपरेटेड ट्रैक जैसे भूमिगत, एलिवेटेड या सतही मार्ग पर चलती है। इसे खास तौर पर शहरों के अंदर कम दूरी की यात्रा के लिए डिजाइन किया जाता है। AC कोच, सुविधाजनक यात्रा और ट्रैफिक जाम कम करने में मदद करने के कारण यह पर्यावरण के अनुकूल और भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन विकल्प माना जाता है।

रैपिड रेल क्या है: रैपिड रेल या नमो भारत ट्रेन एक सेमी-हाई स्पीड रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम है, जो लगभग 160-180 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से चल सकती है। यह आमतौर पर 100 से 250 किमी तक के शहरों के बीच सफर के लिए बनाई गई है। इसकी गति मेट्रो से अधिक और बुलेट ट्रेन से कम होती है, लेकिन यह ज्यादा सुलभ और तेज इंटरसिटी यात्रा उपलब्ध कराती है। इसका मुख्य उद्देश्य अलग-अलग शहरों के बीच यात्रा समय को कम करना है।

मेट्रो और रैपिड रेल में अंतर: मेट्रो और रैपिड रेल के बीच सबसे बड़ा अंतर उनकी गति, स्टॉपेज और यात्रा की दूरी में होता है। मेट्रो ट्रेन आमतौर पर 80-100 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से शहर के भीतर कम दूरी की यात्रा के लिए चलाई जाती है। वहीं रैपिड रेल 160-180 किमी प्रति घंटा की तेज गति से दो शहरों के बीच लंबी दूरी तय करने के लिए बनाई गई है और इसमें स्टॉपेज भी सीमित होते हैं।

एआई इम्पैक्ट समिट पर नहीं थमी रार

बीजेपी का आरोप- बदनाम करने के लिए दी 40 हजार की सुपारी, कांग्रेस ने रची साजिश

» कांग्रेस व भाजपा में जारी है वार- पलटवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत में आयोजित एआई इम्पैक्ट समिट पर अब भी बवाल व रार जारी है। यह आयोजन अब केवल तकनीक और नवाचार का केंद्र नहीं, बल्कि एक बड़े राजनीतिक युद्ध का अखाड़ा बन गई है। यूथ कांग्रेस के सदस्यों द्वारा किए गए शर्टलेस प्रोटेस्ट के बाद अब भारतीय जनता पार्टी ने एक चौंकाने वाला दावा किया है। बीजेपी का आरोप है कि कांग्रेस ने इस अंतरराष्ट्रीय इवेंट की छवि खराब करने के लिए सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स को पैसे देकर एक नेगेटिव पीआर कैंपेन चलाया है।

बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहज़ाद पूनावाला ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए इसे एक सुनियोजित साजिश करार दिया। पार्टी के मुताबिक, कांग्रेस पीआर टीम के सदस्यों ने इन्फ्लुएंसर्स से संपर्क किया और समिट को फेल दिखाने वाले कंटेंट के बदले 10,000 रुपये से 40,000 रुपये तक के पेमेंट का प्रस्ताव दिया। हांलाकि कांग्रेस ने इन सब घटनाओं पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। कई इन्फ्लुएंसर्स के पब्लिकली यह दावा करने के बाद विवाद और बढ़ गया कि उन्हें ऐसे ऑफर मिले थे। ऑनलाइन शेयर किए गए वीडियो में, उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस से जुड़े लोगों ने उनसे इवेंट की बुराई करने वाला स्क्रिप्टेड कंटेंट बनाने के लिए कहा था।उनमें से कुछ ने कहा कि उनके पास कथित फाइनेंशियल डील के सबूत के तौर पर चैट मैसेज और ऑडियो रिकॉर्डिंग हैं।

भाजपा विरोध में देश विरोध कर रही कांग्रेस : पूनावाला

एक्स पर बात करते हुए, बीजेपी के नेशनल स्पोक्सपर्सन शहज़ाद पूनावाला ने दावा किया कि कांग्रेस ने एआई समिट और भारत को बदनाम करने के लिए एक कैंपेन चलाया, जिसमें इन्फ्लुएंसर्स को इवेंट की बदनामी करने के लिए पैसे दिए गए। उन्होंने पोस्ट में लिखा, कांग्रेस का पैसा लो, एआई समिट, भारत बदनाम करो मॉडल। कांग्रेस इकोसिस्टम ने एआई समिट की बुराई करने के लिए पैसे दिए? भाजपा विरोध में देश विरोध? शर्टलेस एक्ट के बाद, अब यह।

नेहरू के कार्यालय में सक्रिय थे विदेशी जासूस : पात्रा

नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में पार्टी सांसद संबित पात्रा ने नेहरू काल की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने दावा किया कि उस समय भारत का सचिवालय विदेशी खुफिया एजेंसियों का अड्डा बन गया था। पात्रा ने आरोप लगाया कि नेहरू के विशेष सहायक एम.ओ. मथाई एक अमेरिकी एजेंट के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने दावा किया कि 1960 के दशक में रूस की खुफिया एजेंसी के जीबी के एजेंट भी नेहरू के कार्यालय में सक्रिय थे। भाजपा प्रवक्ता ने कहा, उस समय यह कहा जाता था कि विदेशी शक्तियों को जो भी गुप्त दस्तावेज चाहिए होते थे, वे नेहरू के कार्यालय से आसानी से उपलब्ध हो जाते थे।

वैध वोटरों के नाम काटने की हो रही साजिश: ममता

» सीएम ने एसआईआर के खिलाफ जंग का किया ऐलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मतदाता सूची के एसआईआर की प्रक्रि या पर गंभीर सवाल उठाते हुए केंद्र सरकार और संबंधित अधिकारियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। अपने निर्वाचन क्षेत्र भवानीपुर में कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन करने के बाद एक जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि राज्य के वैध मतदाताओं के नाम काटने के लिए एक बड़ी साजिश रची जा रही है।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में नागरिकों के नाम हटाये जाने के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखने का बुधवार को संकल्प लिया और कहा कि उन्हें आशंका है कि तार्किक विसंगतियों का हवाला देते हुए 1.2 करोड़ से अधिक नाम हटाने की साजिश रची जा रही है। एसआईआर के पहले चरण के बाद 58 लाख मतदाताओं के नाम हटाए जाने का दावा करते हुए बनर्जी ने कहा, 'तार्किक विसंगतियों के बहाने, 14 फरवरी तक कम से कम 20 लाख और वास्तविक मतदाताओं को गुपचुप तरीके से मतदाता सूची से बाहर कर दिया गया।'यहां अपने भवानीपुर निर्वाचन क्षेत्र में कई परियोजनाओं का उद्घाटन करने के बाद एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मतदाता सूची से 80 लाख नाम हटाने की साजिश रची जा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि इसके बाद पूरक सूचियों के माध्यम से और 40 लाख मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटाने का प्रयास किया जा रहा है।

कलंकित हो गया बाप और बेटे का रिश्ता

» पिता की हत्या करने वाला आरोपी बेटा गिरफ्तार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ में पिता की हत्या कर शव के किए चार टुकड़े करने वाले आरोपी बेटे को गिरफ्तार कर लिया गया है। बता दें आशियाना इलाके में पैथोलॉजी संचालक मानवेंद्र सिंह की हत्या, पोस्टमार्टम रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि पेट व पीठ पर आठ-आठ इंच गहरे कट हैं हालांकि रीढ़ की हड्डी नहीं काट सका था आरोपी।

पुलिस ने बताया कि आरोपी ने बाथरूम में पिता के शव के टुकड़े किया और दुर्गंध छिपाने को रूम फ्रेशनर का सहारा लिश। हत्या के बाद घर की दीवारों पर दोबारा पेंट कर आरोपी ने खून के निशान मिटाए। उसने लाइसेंसी राइफल से पिता को गोली मारकर हत्या की। पुलिस ने हथियार बरामद कर लिया। पुलिस ने क्राइम सीन रीक्रि एशन किया जिसमें आरोपी ने पूरी वारदात दोहराई। बाद में राइफल, आरी और चाकू मिले। पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने उजागर किए रोंगटे खड़े कर देने वाले तथ्य सामने आए। जैसे शरीर को अलग करने की कोशिश। मुनीम के अचानक घर पहुंचने से आरोपी की शव ठिकाने लगाने की पूरी योजना फेलहो गई। आरोपी ड्रम में भरकर शव ले जाने वाला था, तभी खुलासे की शुरुआत हुई। मानवेंद्र सिंह हत्याकांड में पुलिस की गहन अब भी जांच जारी है। मानसिक व पारिवारिक कारणों की पड़तालकी जाएगी।

मेधा सोमैया मानहानि मामले में राउत को राहत

» किरीट सोमैया बोले- हाईकोर्ट में करेंगे अपील

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मेधा सोमैया मानहानि मामले में सांसद संजय राउत को अदालत से राहत मिली है। अब इस पर प्रतिक्रिया देते हुए बीजेपी नेता किरीट सोमैया ने कहा कि कोर्ट का विस्तृत आदेश अभी प्राप्त नहीं हुआ है, लेकिन इस मामले में हाई कोर्ट में अपील निश्चित रूप से दायर की जाएगी। यह मामला कथित 'टॉयलेट घोटाले' को लेकर लगाए गए आरोपों से जुड़ा है इससे पहले शिवड़ी कोर्ट के फैसले के खिलाफ संजय राउत ने सेशन कोर्ट में याचिका दायर की थी।

इस दौरान विधायक सुनील राउत भी सेशन कोर्ट पहुंचे।बता दें सेशन कोर्ट ने शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत को बीजेपी नेता किरीट सोमैया की पत्नी मेधा सोमैया की ओर से दायर मानहानि के मामले में बरी कर दिया है। ये मामला बीजेपी नेता किरीट सोमैया की पत्नी मेधा सोमैया से जुड़े मानहानि केस से संबंधित है। इससे पहले सेशन कोर्ट ने मंगलवार (17 फरवरी) को संजय राउत की याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रखा था। मजिस्ट्रेट कोर्ट ने इस मानहानि मामले में संजय राउत को दोषी ठहराया था, जिसके खिलाफ उन्होने सेशन कोर्ट में याचिका दी थी। शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने मीरा रोड (ठाणे) में 100 करोड़ रुपए के टॉयलेट बनाने के घोटाले का आरोप लगाया था, जो सोमैया की ओर से चलाए जा रहे एक एनजीओ से जुड़ा था. मुंबई के रुइया कॉलेज में ऑर्गेनिक केमिस्ट्री की प्रोफेसर मेधा सोमैया ने अपने और अपने पति के खिलाफ राउत के बदनाम करने वाले आरोपों के लिए उन्हें अदालत में घसीटा था।

संजय राउत को हुई थी 15 दिन जेल की सजा

सितंबर 2024 में, मझगांव मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट कोर्ट ने मेधा सोमैया की ओर से 2022 में दायर मानहानि केस में संजय राउत को दोषी ठहराया था। उद्धव गुट के नेता को 15 दिन की जेल के साथ उन पर 25,000 रुपए का जुर्माना भी लगाया गया था इसके तुरंत बाद राउत ने अदालत में याचिका दाखिल की थी इसके बाद उनकी जेल की सजा को निलंबित कर दिया गया था।

जब केरलम हो सकता है तो बांग्ला क्यो नहीं: उमर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने ममता बनर्जी के पश्चिम बंगाल का नाम बदलकर बांग्ला करने के हालिया बयान का समर्थन करते हुए कहा कि अगर राज्य विधानसभा ऐसा कोई प्रस्ताव रखती है, तो केंद्र को इस पर विचार करना चाहिए।

उमर ने केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा केरल का नाम बदलकर केरलम करने के प्रस्ताव को हाल ही में मंजूरी दिए जाने का हवाला देते हुए बंगाल से इसके अंतर पर सवाल उठाया। उमर ने कहा कि अगर ममता ने यह मांग की है, तो केंद्र सरकार को इसे स्वीकार करना चाहिए। अगर केरल का नाम बदला जा सकता है, तो पश्चिम बंगाल का नाम क्यों नहीं? उन्होंने कहा कि अगर कल जम्मू और कश्मीर विधानसभा राज्य का नाम बदलने का प्रस्ताव रखती है, तो केंद्र को उस पर भी ध्यान देना चाहिए।

दो बदलावों के साथ उतरेगी भारतीय टीम

» जिम्बाब्वे के साथ मुकाबला आज, रिंकू और सुंदर की जगह सैमसन-अक्षर की होगी वापसी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। टी20 विश्वकप 2026 के सुपर-8 चरण में आज भारत और जिम्बाब्वे आमने-सामने होंगे। सेमीफाइनल की दौड़ में बने रहने के लिए यह मुकाबला दोनों टीमों के लिए बेहद अहम है। एक ओर भारतीय टीम को दक्षिण अफ्रीका से करारी हार का झटका लगा, तो दूसरी ओर जिम्बाब्वे की टीम भी वेस्टइंडीज के खिलाफ बड़ी शिकस्त झेल चुकी है। ऐसे में चेन्नई के चेपॉक में होने वाला यह मुकाबला रोमांचक होने की पूरी उम्मीद है।

कप्तान सूर्यकुमार यादव की अगुवाई में भारतीय टीम अब सेमीफाइनल की उम्मीदें जिंदा रखने के लिए न सिर्फ जीत, बल्कि बड़े अंतर से जीत दर्ज करना चाहेगी ताकि नेट रन रेट सुधर सके। भारत और जिम्बाब्वे के बीच अब तक कुल 13 टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले गए हैं। इनमें भारत ने 10 मैच जीते हैं जबकि जिम्बाब्वे सिर्फ तीन मैच ही जीत पाया है। अभिषेक शर्मा लगातार तीन पारियों में शून्य पर आउट हुए हैं, जबकि तिलक वर्मा का स्ट्राइक रेट चिंता का विषय रहा है। ऐसे में संजू सैमसन को प्लेइंग 11 में शामिल किए जाने पर विचार किया जा सकता है। दरअसल, ईशान और अभिषेक बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं। इसके बाद तीसरे नंबर पर आने वाले तिलक वर्मा भी बाएं हाथ से बल्लेबाजी करते हैं। वहीं, दूसरी टीमें लगातार स्पिनर्स का इस्तेमाल कर रही हैं। ऐसे में बदलाव की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। अगर सैमसन की प्लेइंग 11 में वापसी होती है तो वह अभिषेक शर्मा के साथ ओपनिंग करते नजर आ सकते हैं। वहीं ईशान किशन नंबर-3 पर खेलते नजर आ सकते हैं। स्पिन विभाग की कमान वरुण चक्रवर्ती संभाल सकते हैं और उपकप्तान अक्षर पटेल की वाशिंगटन सुंदर की जगह वापसी हो सकती है।

मेजबान श्रीलंका टी20 विश्वकप से बाहर

कोलंबो। मिचेल सैंटनर और कोल मैककोन्की की अर्धशतकीय साझेदारी के बाद रचिन रवींद्र की शानदार गेंदबाजी के दम पर न्यूजीलैंड ने टी20 विश्व कप 2026 की सह-मेजबान श्रीलंका टीम को 61 रन से हरा दिया। इसी के साथ श्रीलंका का सफर टूर्नामेंट में समाप्त हो गया। अब टीम अपना आखिरी मुकाबला पाकिस्तान से खेलेगी। बुधवार को कोलंबो में खेले गए मुकाबले में न्यूजीलैंड ने 20 ओवर में सात विकेट पर 168 रन बनाए। जवाब में श्रीलंका की टीम निर्धारित ओवरों में आठ विकेट पर सिर्फ 107 रन ही बना सकी और मुकाबला हार गई। सुपर-8 मुकाबले में जीत के साथ न्यूजीलैंड ग्रुप-2 की अंक तालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गया। वहीं, इंग्लैंड चार अंक लेकर शीर्ष पर है। श्रीलंका दो मैचों में शिकस्त झेलने के बाद आखिरी पायदान पर पहुंच गई। वहीं, पाकिस्तान फिलहाल एक अंक के साथ तीसरे स्थान पर है। सलमान आगा की टीम को अपना आखिरी मुकाबला 28 फरवरी को खेलना है। पाकिस्तान अगर यह मैच जीत भी लेता है तो तीन अंक हासिल कर पाएगा, लेकिन नेट रन रेट में न्यूजीलैंड उससे बाजी मार लेगा और सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई कर लेगा।

एनडीए सरकार को कड़ी फटकार

एनसीईआरटी बुक के चैप्टर मामले पर सख्त हुए सीजेआई, शिक्षा विभाग ने सुप्रीम कोर्ट से माफी मांगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार (26 फरवरी, 2026) को एनसीईआरटी बुक के चैप्टर मामले पर स्वत: संज्ञान लेते हुए सुनवाई की, जिसमें मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत बेहद नाराज नजर आए। इस दौरान शिक्षा विभाग ने सुप्रीम कोर्ट से माफी मांगी, लेकिन सीजेआई ने कहा कि जब तक ये नहीं पता चल जाता कि इसके पीछे कौन-कौन है और जब तक वह संतुष्ट नहीं होते, तब तक सुनवाई चलेगी। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल एम. पंचोली की बेंच मामले पर सुनवाई कर रही थी। इस दौरान शिक्षा विभाग की तरफ से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता मौजूद थे।

सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल और अभिषेक मनु सिंघवी ने भी सुनवाई में चैप्टर को लेकर आपत्तियां जताईं। क्लास 8 की सोशल साइंस की नई किताब में ज्यूडिशियरी को लेकर एक चैप्टर है, जिसका टाइटल न्यायापालिका में भ्रष्टाचार है, इस चैप्टर में कोर्ट्स में पेंडिंग केस जैसी कई जानकारियां शामिल हैं। सीजेआई सूर्यकांत ने इस मामले में सुनवाई करते हुए कुछ अहम टिप्पणियां की हैं। सीजेआई ने आदेश में कहा कि व्यवस्था के 3 अंग – विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका लोकतंत्र के सुचारू रूप से काम करने के लिए जरूरी हैं, उन्होंने कहा, हमें एक अखबार से एनसीईआरटी की किताब में लिखे गए अंश का पता चला. इसे जानकर हमें आघात पहुंचा।

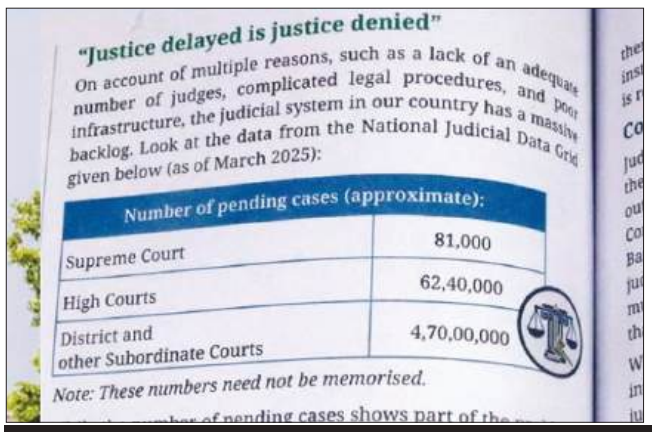
"Justice delayed is justice denied"

On account of multiple reasons, such as a lack of an adequate number of judges, complicated legal procedures, and poor infrastructure, the judicial system in our country has a massive backlog. Look at the data from the National Judicial Data Grid given below (as of March 2025):

Number of pending cases (approximate):	
Supreme Court	81,000
High Courts	62,40,000
District and other Subordinate Courts	4,70,00,000

Note: These numbers need not be memorised.

...number of pending cases shows part of the...

न्यायपालिका को लेकर कुछ बातों पर थी आपत्ति

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि हम उन अंशों को यहां दोबारा नहीं दर्ज करना चाहते हैं. उन्होंने कहा कि पूर्व चीफ जस्टिस के एक बयान का बिना संदर्भ उल्लेख कर यह बताने की कोशिश की गई कि न्यायापालिका में भ्रष्टाचार है, किताब में पूर्व सीजेआई भूषण रामकृष्ण गवई का जिक्र करते हुए न्यायापालिका को लेकर कुछ बातें लिखी गई हैं। सीजेआई ने कहा कि उन्होंने खबर पढ़ने के बाद अपने सेक्रेट्री जनरल को जानकारी लेने के लिए कहा कि क्या वाकई ऐसी किताब छपी है, जिस पर एनसीईआरटी के निदेशक ने जवाब में उस सामग्री को सही ठहराया. उन्होंने कहा कि यह बहुत अवमाननापूर्ण था।

सोच समझकर न्यायपालिका की गरिमा को नुकसान पहुंचाने का प्रयास : सीजेआई

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि ऐसा लगता है कि यह सोच समझकर न्यायापालिका की गरिमा को नुकसान पहुंचाने के लिए किया गया. सीजेआई ने कहा कि न्यायापालिका के बारे में इस तरह की बातें करना और उसके प्रति असम्मान फैलाना निश्चित रूप से आपराधिक अवमानना का मामला हो सकता है. अगर ऐसा जान-बूझकर किया गया है तोसीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि यह सोचा-समझा योजनाबद्ध कदम है. बच्चों के अलावा शिक्षक और अभिभावक भी इसे पढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि हम अधिकारियों को सिर्फ माफी पर जाने नहीं दे सकते। यह कहना कि इसे हटाया जा रहा है, काफी नहीं, किताब मार्केट में गई, मैंने भी इसकी एक कॉपी देखी है, उन्होंने शिक्षा विभाग को आदेश दिया कि मार्केट और स्कूलों में भेजी गई किताबें वापस ली जाएं और किताब का ऑनलाइन मटीरियल भी हटाया जाए. सीजेआई सूर्यकांत

ने कहा कि वह सुनवाई बंद नहीं करेंगे. पता करना है कि इसके पीछे कौन-कौन है. उन्होंने कहा कि इस किताब को जनसामान्य और खास तौर पर कम उम्र के बच्चों तक जाने देना गलत होगा।

सही मंशा से की गई किसी भी आलोचना को नहीं रोकते

सीजेआई ने कहा कि इस किताब में लोगों के अधिकारों की रक्षा में न्यायापालिका की बड़ी भूमिका की उपेक्षा की गई है. लोगों को कानूनी सहायता देने और न्याय पाने में सहूलियत के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार के खिलाफ कई अहम आदेश पारित किए है, ऐसा नहीं लगता कि किताब का अंश अच्छी मंशा से लिखा गया है, सीजेआई सूर्यकांत ने यह भी कहा, हम यह साफ करना चाहते हैं कि हम सही मंशा से की गई किसी भी आलोचना को नहीं रोकना चाहते यह बातें किसी भी संस्था के बेहतर काम के किए जरूरी होती हैं, सीजेआई ने आगे कहा कि लेकिन न्यायापालिका की गरिमा को बनाए रखना जरूरी है, कम उम्र के बच्चों तक पक्षपातपूर्ण तरीके से बात पहुंचाना उनके मस्तिष्क को प्रभावित करेगा। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि यह समझना भी जरूरी है कि यह किताब बच्चों के अलावा शिक्षकों, अभिभावकों या पूरे समाज तक जाएगी भविष्य की पीढ़ियों को भी प्रभावित करेगी।

महाराष्ट्र राज्यसभा चुनाव में विपक्ष की एक सीट पर कांग्रेस लड़ेगी चुनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में 7 सीटों के राज्यसभा चुनाव महा विकास अघाड़ी के घटक दलों कांग्रेस और नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (शरद चंद्र पवार) के नेताओं के बीच एक अहम मीटिंग हुई। इस मीटिंग में महा विकास अघाड़ी में एक दुविधा पैदा हो गई है क्योंकि दोनों पार्टियों ने राज्यसभा सीट पर दावा किया है7 मीटिंग में, कांग्रेस नेताओं ने राज्य की सियासत के बजाय देश के सियासी समीकरण पर जोर दिया।

सूत्रों के मुताबिक पार्टी नेताओं का मानना है कि राज्यसभा में कांग्रेस सदस्यों की संख्या बढ़ाना समय की जरूरत है, और पार्टी ने यह रुख अपनाया है कि राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी की ताकत को मजबूत करने के लिए यह सीट कांग्रेस को दी जानी चाहिए. नेताओं ने यह भी साफ किया कि यह सीट कांग्रेस के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न है। दूसरी ओर, नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (शरद चंद्र पवार) के नेताओं ने शरद पवार के लंबे संसदीय अनुभव का मुद्दा उठाया। एनसीपी नेताओं ने कहा कि शरद पवार देश के सीनियर नेता हैं और राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी की ताकत और असर बनाए रखने के लिए उनका राज्यसभा जाना जरूरी है। इस बारे में शरद पवार की निज इच्छा जानने के बाद ही अपनी आखिरी राय बताएगी। हालांकि दोनों पार्टियां अपनी-अपनी सीटों को लेकर अड़ी हुई हैं, लेकिन अभी तक कोई आखिरी हल नहीं निकला है. सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कांग्रेस ने एनसीपी को बताया है कि वह शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) से इस मुद्दे पर बात करेगी और इस मामले पर फैसला लेगी। एनसीपी के जयंत पाटिल आज शरद पवार से मिलेंगे और मीटिंग की जानकारी देंगे. उसके बाद, वह उद्धव ठाकरे से भी मिलेंगे और इसके लिए समय मांगा है।

समाज को डराने की कोशिश करने वाले वास्तव में कायर : राहुल गांधी

» लोकसभा में विपक्ष के नेता से जिम ट्रेनर दीपक कुमार ने की मुलाकात

» सांसद ने वीडियो साझा करते हुए लिखा-सद्भाव और प्रेम की विचारधारा लाखों भारतीयों के दिलों में बसी है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने जिम ट्रेनर दीपक कुमार से हुई मुलाकात की सराहना करते हुए उनकी साहस और देशभक्ति की प्रशंसा की। अपनी मुलाकात का वीडियो साझा करते हुए गांधी ने लिखा कि सद्भाव और प्रेम की विचारधारा लाखों भारतीयों के दिलों में बसी है, लेकिन उनके मन में भय भी है - दीपक ने अपने साहस से उन सभी को सही राह दिखाई है।

उन्होंने आगे कहा कि जो लोग नफरत फैलाने और समाज को डराने की कोशिश करते हैं, वे वास्तव में कायर हैं - उनसे कभी मत डरो। दीपक ने हमारे तिरंगे और हमारे संविधान की रक्षा की है। उन्होंने नफरत के खिलाफ मजबूती से खड़े होकर कमजोरों की रक्षा की - इससे बड़ी देशभक्ति और कोई नहीं। इससे पहले विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने जिम ट्रेनर दीपक से मुलाकात की, जो पिछले महीने कोटद्वार के अहमद बाबा स्कूल ड्रेस एंड मैचिंग सेंटर के बचाव में आने के कारण सुर्खियों में थे। यह घटना 26 जनवरी को घटी, जब कुछ लोगों ने दुकानदार से दुकान का नाम बदलने की मांग की। दुकानदार द्वारा उनकी मांग मानने से इनकार करने पर विवाद खड़ा हो गया।

बताया जाता है कि जिम ट्रेनर दीपक कुमार ने भीड़ का सामना किया, जिसके बाद 31 जनवरी को विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। दीपक कुमार ने बताया कि मैं और मेरे दोस्त गणतंत्र दिवस मना रहे थे, तभी हम अपने एक दोस्त की दुकान पर गए। कुछ लड़के दुकान पर आए और दुकान के नाम को लेकर दुकानदार से बदतमीजी करने लगे। मैंने उनसे बदतमीजी बंद करने को कहा, लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि उनके धर्म में बाबा शब्द केवल सिद्धबली बाबा के लिए इस्तेमाल होता है, किसी और के लिए नहीं, और दुकानदार को दुकान का नाम बदलना होगा। दुकानदार ने इनकार कर दिया, और बहस सांप्रदायिक मुद्दे में बदल गई।

फिल्म द केरल स्टोरी-2 पर हाईकोर्ट ने लगा दी रोक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। केरल हाई कोर्ट ने गुरुवार को फिल्म द केरल स्टोरी 2-गोज बियॉन्ड की रिलीज पर अंतरिम रोक लगा दी है। केरल हाई कोर्ट ने गुरुवार को फिल्म केरल स्टोरी 2 की रिलीज पर 15 दिनों के लिए रोक लगा दी। कोर्ट ने कहा कि पहली नजर में ऐसा लगता है कि सेंसर बोर्ड ने फिल्म को सर्टिफिकेट देते हुए सोच-समझकर काम नहीं लिया।

जस्टिस बेचू कुरियन थॉमस ने फिल्म की रिलीज को चुनौती देने वाली दो याचिकाओं पर यह आदेश दिया। फिल्म 27 फरवरी को रिलीज होने वाली थी। हाईकोर्ट में दायर याचिकाओं में द केरल स्टोरी 2 के मेकर्स को सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन से मिले सर्टिफिकेशन को चुनौती दी गई थी।

मायावती के बाद विधायक उमाशंकर के पक्ष में उतरे सपा मुखिया अखिलेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी के इकलौते विधायक उमाशंकर सिंह के लखनऊ और अन्य स्थानों पर आवास व प्रतिष्ठानों पर आयकर विभाग के छापों के बाद राजनीति बेहद गरम हो गई है।

योगी आदित्यनाथ सरकार के मंत्री दिनेश प्रताप सिंह व बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इसकी कड़े शब्दों में निंदा की है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर उमाशंकर सिंह के आवास व प्रतिष्ठानों पर छापों को भाजपा की सरकारी डकैती बताया है। उन्होंने इसमें दिनेश प्रताप सिंह के मीडिया के दिए गए बयान को भी टैग किया है। अखिलेश यादव ने लिखा है, भाजपाई छापे सरकारी डकैती होते हैं। भाजपा के छापे लोगों के कमाये गये पैसों को लूटने का काम करते हैं। भाजपाई जहां भी देखते हैं कि कहीं धन-दौलत जमा होने की संभावना हो सकती है, वहां अपनी एजेंसियां लेकर पहुंच जाते हैं।

उमाशंकर और करीबियों के घर पर आईटी रेड जारी

» ऑफिस और अन्य जगहों से 10 करोड़ कैश बरामद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में बसपा के इकलौते विधायक उमाशंकर सिंह और उनके करीबियों के घर पर बुधवार से जारी आयकर टीम का छापा गुरुवार को समाप्त हो गया। उनके घर से 10 करोड़ की नकदी बरामद हुई है। अभी उनके ऑफिस और अन्य स्थानों पर कार्रवाई जारी है। विपुलखंड स्थित उनके आवास पर कार्रवाई पूरी हो गई है।

बलिया की रसड़ा विधानसभा सीट से एकमात्र बसपा विधायक उमाशंकर सिंह के ठिकानों पर बुधवार को आयकर विभाग ने बड़ी कार्रवाई की। लखनऊ, बलिया, सोनभद्र, कौशांबी, मिर्जापुर और प्रयागराज में 30 से अधिक स्थानों पर एक साथ छापे मारे गए। 50 से ज्यादा अधिकारियों की टीमें सुबह 11 बजे से देर रात तक जांच में जुटी रहीं। खबर लिखे जाने तक तीन करोड़ रुपये से अधिक की नकदी गिनी जा चुकी थी। आयकर विभाग की तीन टीमों ने लखनऊ के गोमतीनगर में विपुल खंड स्थित उमाशंकर सिंह के आवास, उनकी कंपनी छात्रशक्ति कंस्ट्रक्शन कंपनी के कॉरपोरेट ऑफिस और वजीर हसन रोड पर करीबी ठेकेदार फैजी के ठिकानों को खंगाला। इसके अलावा सोनभद्र में साईं राम इंटरप्राइजेज कंपनी के नाम से खनन का कारोबार करने वाले उमाशंकर सिंह के करीबी सीबी गुप्ता समेत कई खनन कारोबारियों के ठिकानों को खंगाला जा रहा है। आयकर विभाग ने सुबह 11 बजे सभी ठिकानों पर एक साथ छापा मारा था, जिसके बाद टैक्स चोरी और बेनामी संपत्तियों से जुड़े अहम सुराग मिले हैं। उमाशंकर सिंह छात्रशक्ति कंस्ट्रक्शन कंपनी और साईं राम इंटरप्राइजेज के नाम से सड़क और खनन से जुड़े कार्य करते हैं। बीते वर्ष सीएजी (कैग) ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि सोनभद्र में अवैध खनन कार्यों से करीब 60 करोड़ रुपये की राजस्व की हानि हुई थी। माना जा रहा है कि सीएजी की इस रिपोर्ट के बाद ही उमाशंकर सिंह और उनके करीबियों के ठिकानों को खंगाला गया है।आयकर छापे में सोनभद्र और मिर्जापुर में बीते कुछ वर्षों के दौरान हुए अवैध खनन से जुड़े अहम दस्तावेज हाथ लगे हैं, जिसमें कई अधिकारियों के नाम और उनको दी जाने वाली रकम का जिक्र है। आयकर विभाग को शक है कि खनन कारोबार में कई ब्यूरोक्रेट्स की काली कमाई का निवेश किया गया है, जिसके सुराग जुटाए जा रहे हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**